राम और श्याम शिकार करने चले...
राम-श्याम का जेट तेजी से उड़ा... सीधा जाकर अफ्रीका रुका.
वहाँ का राजा खुशी-खुशी आया... उनकी सुरक्षा का बन्दोबस्त करवाया
शुरु हो गया उनका शिकार... आओ मिलकर देखें खेल मज़ेदार
पेड़ फलों का था एक सुन्दर... नाच रहे थे उस पर बन्दर
बन्दरों ने श्याम का किया घेराव... फलों में अब रहा न चाव
पॉपिन्स की देख मीठी मीठी गोलियाँ... फल छोड़ दौड़ीं बन्दरों की टोलियाँ
रसीली प्यारी मजेदार
पारले पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
५ फलों के स्वाद—
रास्पबेरी, अनानास,
नीबू, नारंगी व मोसंबी.
हर पैकेट में १३ गोलियां.
PARLE
POPPINS
FRUITY SWEETS
everest/547 /PP hin

अपनी रक्षा आप...

डैडी, सुनील ने आज सवेरे मुझे मारा
तुमने वापिस क्यों नहीं मारा? अपनी रक्षा आप करना सीखो!

देखो, घूँसे से बचने के लिए या तो पीछे या बाजू हट जाओ या ऐसे झुक जाओ कि वार खाली जाय।

घूँसे को कलाई पर भी रोक सकते हो।

या उसे भुजा या कन्धे पर भी झेल सकते हो।

हाँ ऐसे! 'बॉक्सिंग' यानी अपनी रक्षा आप करने का यह तुम्हारा पहला सबक है।

बाप रे, बड़ी देर हो गयी। चलो सो जाएँ। रोहित, तुमने दाँत तो साफ़ कर लिए हैं न?
डैडी, मैं रोज़ सवेरे तो करता हूँ।

नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में फँसे सभी अन्न-कण निकल आयेंगे; दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूड़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मज़बूत रहें।

चलो, हम दोनों फ़ोरहैन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।
हाँ, डैडी!
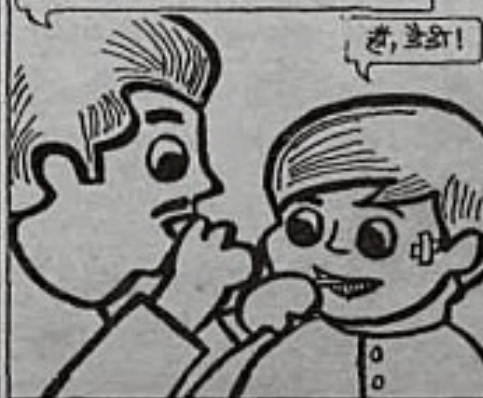
Forhan's
FOR THE GUMS
फ़ोरहैन्स
—दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

हमें तो
प्यारा लगता है
चन्दामामा
चन्दामामा
आपको भी प्यारा लगेगा
चन्दामामा के हरेक पुरुष, हरेक स्त्री और हरेक बच्चा
पढ़ता है। अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती
मलयालम, बंगला और उड़िया इन दस भाषाओं में प्रकाशित बच्चों
के इस मासिक पत्र में अत्यन्त रोचक और आश्चर्य
भरी कहानियां रहती हैं जो हर दिल में एक
उत्साह, एक उमंग भर देती हैं।
चन्दामामा बालकों का अपना मासिक पत्र जिससे बड़े बनते
नौजवान और नौजवान बनते बड़ो जैसे बुद्धिमान

फरवरी १९७४ से
'चन्दामामा' का मूल्य एक रुपया

आजकल देश में प्रतिनित्य सभी वस्तुओं के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं। कागज़ का मूल्य तो हद से ज्यादा बढ़ गया है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह बढ़ती कहाँ तक जाकर रुकेगी! ऐसी विषम स्थिति में भी हम 'चन्दामामा' का मूल्य बढ़ाये बिना आज तक उसी पुराने मूल्य पर देते आ रहे हैं, पर अब हम मूल्य बढ़ाने के लिए विवश हैं। इसलिए फ़रवरी '७४ के अंक से हम सिर्फ़ दस पैसे मात्र बढ़ाकर 'चन्दामामा' का मूल्य एक रुपया निर्द्धारित कर रहे हैं। हम विश्वास करते हैं कि इस छोटे से परिवर्तन को हमारे सहृदय पाठक, हितैषी और एजेंट बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार करेंगे और पूर्ववत् हमें अपना सहयोग देंगे।

—प्रकाशक

चन्दामामा
संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'
आज सभी वस्तुओं के मूल्य के साथ कागज़ का दाम भी हद से ज्यादा बढ़ गया है, इसलिए हमें लाचार होकर चन्दामामा का मूल्य सिर्फ़ दस पैसे बढ़ाकर एक रुपया करना पडा है। अत फरवरी '७४ से हमने चन्दामामा का मूल्य एक रुपया निर्द्धारित करने का निश्चय किया है। आशा है कि हमारे पाठक एवं एजेंट भी सहृदयता के साथ इसे स्वीकार करेंगे और पूर्ववत अपना संपूर्ण सहयोग देंगे।
वर्ष : २६ जनवरी १९७४ अंक : ७
CP
CHITRA

गुणाः खलु गुणा एव
न गुणा भूतिहेतवः,
धनसंचयकत्रूणि
भाग्यानि पृथगेव हि ॥ १ ॥

[सद्गुण केवल सद्गुण ही हैं, पर वे ऐश्वर्य प्रदान नहीं करते । धन प्राप्ति के लिए भाग्य नामक एक चीज और होती है ।]

आत्मायत्ते गुणग्रामे,
नैर्गुण्यम् वचनीयता,
दैवायत्तेषु वित्तेषु
पुंसाम् का नाम वाच्यता? ॥ २ ॥

[सद्गुण स्वशक्ति के द्वारा संपादित होनेवाले हैं । उनके न होना गलत है, पर भाग्यवश प्राप्त होनेवाले धन के न होने से कोई गलती नहीं है ।]

यस्यास्ति वित्तम् स नरः कुलीनः,
स पंडित, स्स श्रुतवान्, विदिज्ञः,
स एव वक्ता, स च दर्शनीयः,
सर्वेगुणाः कांचन माश्रयंति । ॥ ३ ॥

[जिसके पास धन होगा, वही कुलीन है, वही पंडित है, वही शास्त्रज्ञ है, वही कर्तव्य का ज्ञाता है, वही लोकप्रिय है, वही सुंदर है, इतना क्यों, समस्त सद्गुण धन के साथ होते हैं ।]

यक्ष पर्वत

[१९]

[वीरपुर के राजा का आदेश पाते ही सेनापति घुड़ सेना और पैदल सेना को साथ ले चल पड़ा और पहाड़ पर रहनेवाले स्वर्णाचारी को चेतावनी दी कि वह हथियार डाल दे। पर समरबाहू के अनुचरों ने वीरपुर के सैनिकों पर भाले फेंक दिये। उनमें से एक सन सनाते जाकर वीरपुर के सेनापति के कंधे में जा चुभा। बाद...]

समरबाहू के अनुचर के द्वारा भाले की चोट खाकर वीरपुर का सेनापति चिल्ला पड़ा और घोड़े से नीचे जा गिरा। गिरते समय उसके कंधे में चुभा हुआ भाला फिसल कर बगल में गिर गया। वीरपुर के सैनिक अपने सेनापति को दूर ले गये और घाव पर पट्टी बांध दी।

स्वर्णाचारी ने समरबाहू के अनुचरों की तारीफ़ करते कहा—"हम लोगों ने पहली ही वार में दुश्मन को थर्रा दिया। वैसे हम लोग हिसाब में छब्बीस हैं, फिर भी दुश्मन हमारी ताक़त का अंदाज़ ज्यादा ही करेगा और वे हिम्मत करके पहाड़ पर चढ़ने का प्रयत्न नहीं करेंगे।"

यह बात सुनते ही समरबाहू का एक अनुचर बोला—"महामंत्री, अगर दुश्मन साहस करके पहाड़ पर चढ़ने का प्रयत्न करेगा तो हमने जिन जंगलियों को नियुक्त

किया है, वे दुश्मन पर शेर और बाघों को उकसा कर तितर-बितर कर देंगे।"

स्वर्णाचारी ने पहाड़ के नीचे इकट्ठे हुए बीरपुर के सैनिकों की ओर देखा। उनमें से थोड़े ही लोग अब घोड़ों पर सवार थे। बाक़ी लोग घायल सेनापति को घेरकर उसके आदेश सुन रहे थे। घायल सेनापति समझा रहा था कि पहाड़ी दुर्ग पर कैसे अधिकार कर लेना है। वह पीड़ा के मारे कराह रहा था।

समरबाहू के दो हिम्मतवर अनुचर स्वर्णाचारी के पास पहुँचे और बोले—"महामंत्री, दुश्मन पर हमला करने के लिए यह अच्छा मौक़ा मालूम होता है। आप आज्ञा दे दीजिए, हम उन पर चढ़ाई करके हमारे भालों का उन्हें शिकार बनायेंगे और उनके घोड़ों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे।"

समरबाहू के अनुचरों की हिम्मत देख स्वर्णाचारी को बड़ी ख़ुशी हुई, मगर पहाड़ से उतरकर शत्रु पर हमला करना उसे दुस्साहस प्रतीत हुआ। उसने समझाया—"तुम लोग जल्दबाजी मत करो। संख्या में दुश्मन हमसे दस गुना ज्यादा है। उन पर हमला करने के लिए पहाड़ पर से हमें उतरते देख वे मिनटों में तैयार होकर हमें घेर लेंगे और हमारा सर्वनाश कर बैठेंगे। हमारे सभी ऊँटों को पहाड़ के उस पार समतल मैदान में सुरक्षित रखा है न?"

"सभी ऊँटों को हमने एक जगह इकट्ठा करके उन पर पहरा बिठाया है। आपका आदेश क्या है? हमारे भालों के निशानों के क्षेत्र से काफ़ी दूर वे लोग चले गये हैं। अब क्या वे लोग वहाँ और हम यहाँ रहेंगे? बस, यही होगा!" समरबाहू के दो अनुचरों ने पूछा।

उनकी बातों पर मुस्कुरा कर स्वर्णाचारी बोला—"इस भ्रम में मत पड़ो कि लड़ाई अभी ख़तम हो गयी है। क्या तुम लोग यह सोचते हो कि दुश्मन का सेनापति

घायल हो गया तो उसके सारे सैनिक भाग जायेंगे? ऐसा करने पर वीरपुर का राजा उसे देशद्रोही घोषित कर फांसी पर चढ़वा देगा।"

स्वर्णाचारी ये बातें कह ही रहा था कि उधर वीरपुर के सैनिकों में से कुछ लोग दौड़कर गये और घोड़ों पर सवार हो गये। पैदल सैनिक भाले उठाकर पहाड़ की ओर ताकने लगे। इतने में दो सैनिकों ने हाथ का सहारा दे सेनापति को एक घोड़े पर बिठा दिया। उसके साथ चार-पांच सैनिक हो लिये, तब सेनापति धीमी चाल से घोड़े को दौड़ाते पहाड़ की घाटी की सावधानी से जांच करने लगा।

दुश्मन के सेनापति की गति-विधि को देखते ही स्वर्णाचारी ने भांप लिया कि शत्रु सेनापति पहाड़ पर चढ़ने के लिए कोई आसान मार्ग ढूंढ रहा है। समरबाहु के अनुचर रोज़ जिस मार्ग से पहाड़ पर चढ़ते व उतरते हैं, उस पगडंडी को पहचानना दुश्मन के सेनापति के लिए कोई कठिन बात नहीं है। इसलिए स्वर्णाचारी ने समरबाहू के अनुचरों को सचेत किया कि वे दुश्मन पर भाले, ढेला मार करने को तैयार हो जायें! तब एक अनुचर को साथ ले उन जंगलियों के पास पहुँचा जो सिंह और बाघों को लेकर तैयार बैठे थे।

स्वर्णाचारी को देखते ही जंगलियों ने ख़ुशी से खड़े होकर प्रणाम किया। जंगली दल का नेता स्वर्णाचारी से बोला—"महाराज, वीरपुर के राजा के सैनिकों से आपके सैनिक ही ज़्यादा हिम्मतवर और लड़ाई में निपुण मालूम होते हैं। पहली वार में ही भाला फेंककर दुश्मन के सेनापति को मार गिराया है।"

"वह मरा नहीं, बस, घायल हो गया है। इस बार दुश्मन पहाड़ तले रहकर हमें हथियार डाल देने की चेतावनी दिये बिना हमारे दुर्ग को पकड़ने के लिए

जंगली दल के नेता ने स्वर्णाचारी को अपने अनुचरों को दिखाकर कहा– "महाराज, वीरपुर के सैनिक ज्यों ही इन गुफाओं के निकट आयेंगे, त्यों ही मेरे अनुचर पिंजड़ों के दर्वाजे खोलकर गुफा के ऊपरी भाग पर दौड़ जायेंगे। भूखे खूँख्वार जानवर सामने पगडंडी पर दीखनेवाले दुश्मन पर हमला करके उन्हें नोच-नोचकर खा जायेंगे।"

"वे जानवर दुश्मन पर हमला कर भी सकते हैं या पिंजड़ों से मुक्त होने पर पहाड़ से उतर कर जंगल में भाग भी सकते हैं। चाहे कुछ भी हो, तुम लोग अपना प्रयत्न करो। एक बात सुनो, मैं महाराजा नहीं हूँ, उनका मंत्री हूँ। तुम लोग हमारी जो मदद कर रहे हो, इसके लिए हमारे राजा उचित पुरस्कार देंगे, याद रखो।" स्वर्णाचारी ने कहा।

स्वर्णाचारी जंगली दल से बात करके सगरबाहू के अनुचरों के पास लौट आया और पहाड़ के नीचे की ओर देखा। इस पर वीरपुर के सेनापति ने जान लिया कि पहाड़ पर रहनेवालों से हथियार डालने का आदेश देने से कोई फ़ायदा नहीं है, इसलिए पहाड़ पर के क़िले को पकड़ने के लिए कोई नयी योजना बनायी। पैदल सैनिक पहले पगडंडी से पहाड़ पर चढ़ आनेवाला है। पहाड़ पर चढ़ने के लिए दुश्मन के वास्ते यह पगड़ंड़ी बड़ी आसान है। तुम लोग मौक़ा देख दुश्मन पर छोड़ने के लिए सिंह और दो बाघों को तैयार रखो।" स्वर्णाचारी ने समझाया।

इसके बाद जंगली दल का नेता स्वर्णाचारी को पगडंडी के बाजू में स्थित छोटी गुफाओं के पास ले गया। सिंह का पिंजड़ा एक गुफ़ा के अगले हिस्से में था। बाघों के पिंजड़े इसी प्रकार एक और गुफा के सामने रखे गये थे। उन पिंजड़ों पर दो-दो जंगली योद्धा बैठे हुए थे।

चढ़ने को तैयार हो गये। उनमें कुछ लोगों के पास तीर और कमान थे। ऊपर से समरबाहू के अनुचर भाला या ढेलामार से पत्थर फेंकते ही सैनिक रुक जाते और उन पर बाण छोड़ते थे।

स्वर्णाचारी ने जान लिया कि इस लड़ाई में वीरपुर के कुल सैनिक भले ही मर जायें, मगर बचे हुए लोगों में से कुछ लोग ज़रूर पहाड़ पर चढ़ आयेंगे; तब अपने छब्बीस योद्धाओं के द्वारा शत्रु के सैनिकों को हराना मुश्किल है। यह सोचकर उसने समरबाहू के अनुचरों को बुलाकर कहा—"हमें जहाँ तक हो सके, ज्यादा से ज्यादा शत्रुओं का वध करके यहाँ से जंगल में भाग जाने के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं है। तुम में से पहले ही दो-तीन आदमी जाकर हमारे भाग जाने के लिए ऊँटों को तैयार रखो। पहले से ही हमारे दो आदमी वहाँ पर हैं।"

इस बीच वीरपुर के सैनिक बाण छोड़ते पगडंडी के रास्ते पहाड़ पर चढ़ने लगे। सेनापति पहाड़ के नीचे ही रहकर घुड़ सवारों को कोई आदेश दे रहा था। उनमें से कुछ घुड़ सवार पैदल सैनिकों के पीछे पहाड़ पर चढ़ने लगे।

"हे उष्ट्रवीरो, वीरपुर का सेनापति मूर्खतावश कुछ घुड़ सवारों को पहाड़ पर

भेज रहा है, शायद वह सोचता है कि हमारे ऊँटों का दल यहाँ पर है। तुम में से कुछ लोग ऊपर से पगडंडी पर भारी पत्थर लुढ़का दो, बाक़ी लोग निशान देख ढेला मारों को चलाओ।" स्वर्णाचारी ने आदेश दिया।

समरबाहू के अनुचरों में से कुछ लोगों ने भारी पत्थरों को पगडंडी के रास्ते पहाड़ पर चढ़कर आनेवाले वीरपुर के सैनिकों पर लुढ़का दिया। मगर कई पत्थर रास्ते में पड़नेवाले ऊबड़-खाबड़ मार्ग में लुढ़कते निशाना चूककर दूसरे रास्तों में लुढ़कने लगे। समरबाहु के अनुचरों के प्रयत्न को विफल होते देख

वीरपुर के सैनिक उत्साह में आकर चिल्लाते ऊपर चढ़कर आने लगे। उनका अनुसरण करके आनेवाले घुड़ सवार तलवार खींचकर ऊपर उठाते वीरपुर के राजा की जयकार करने लगे।

थोड़ी ही देर में वे लोग जंगली दलवाले जिन गुफाओं के पास ताक में बैठे थे, वहाँ पहुँचे। स्वर्णाचारी यह सोचकर परेशान था, कि जंगली लोग सिंह और बाघों को वीरपुर के सैनिकों पर छोड़ देंगे या डर के मारे भाग जायेंगे, तभी उसे अचानक सिंह और बाघों के गर्जन सुनाई दिये। दूसरे ही क्षण सिंह और बाघ पिंजड़ों में से बाहर कूदकर वीरपुर के सैनिकों पर झपट पड़े। इतने में सैनिकों में हाहाकार मच गया। अचानक होनेवाले इस हमले का सामना करने को वे तैयार न थे। उनमें से चार-पांच सैनिक सिंह और बाघों के पंजों की मार खाकर नीचे गिर गये। कुछ लोग बचकर तो भाग खड़े हुए, लेकिन पत्थरों पर फिसलने के कारण गिरकर पहाड़ पर लुढ़कने लगे।

इस भगदड़ में सैनिकों के पीछे आनेवाले घोड़े भड़क उठे और पीछे की ओर भागते सवारों के साथ गिरकर लुढ़कते लुढ़कते पहाड़ी तलहटी में जा गिरे। पलक मारते यह सब हो गया। इस घटना को देख वीरपुर का सेनापति एकदम चकित रह गया, सिंह और बाघ अपने सामने पड़नेवाले सभी लोगों को घायल करके पत्थरों पर छलांग मारते पहाड़ के नीचे चले गये और वहाँ से समीप में स्थित जंगल में घुस पड़े।

स्वर्णाचारी और समरबाहू के अनुचरों की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। पहाड़ पर चढ़ने का प्रयत्न करनेवाले प्यादे और घुड़ सवारों में से कुछ लोग मर गये और बाक़ी लोग लंगड़ाते, एक दूसरे का सहारा लेकर पहाड़ के नीचे चले गये। इसे देख समरबाहू के अनुचर स्वर्णाचारी से

बोले–"महामंत्री, हमें आज्ञा दीजिए। अभी हम हमला करके घायल होकर लौटनेवाले सैनिकों पर भालों का प्रहार करके उन्हें मार डालेंगे।"

स्वर्णाचारी ने उनकी बातें तो सुनीं, मगर उसने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। अभी जितने सैनिकों को हराया गया था, वे सब क़िले को घेरने के लिए आये हुए कुल सैनिकों में से दसवें हिस्से से ज्यादा न होंगे। बाक़ी सब पहाड़ के नीचे फिर एक बार हमला करने को तैयार हो रहे थे। इस बार वे चढ़ाई कर बैठेंगे तो उन्हें तितर-बितर करने के लिए समरबाहू के अनुचरों के पास सिंह या बाघ भी नहीं थे।

अब पहाड़ के निचले भाग में वीरपुर का सेनापति अपने सभी सैनिकों को एक जगह इकट्ठा करके बात कर रहा था। घुड़सवारों में से कुछ लोग पहाड़ के दूसरे छोर पर देखने गये थे कि वहाँ पर क्या है? स्वर्णाचारी ने समरबाहू के अनुचरों को दुश्मन को दिखाते हुए कहा–"साहस और दुस्साहस में बड़ा अंतर है, युद्ध में दुस्साहस करना ठीक नहीं है। देखो, दुश्मन का सेनापति फिर एक बार हम पर हमला करने को तैयार हो रहा है। इस बार हम जो थोड़े लोग हैं, शत्रु के सैनिक और घुड़सवारों के साथ द्वन्द्व युद्ध करना होगा।
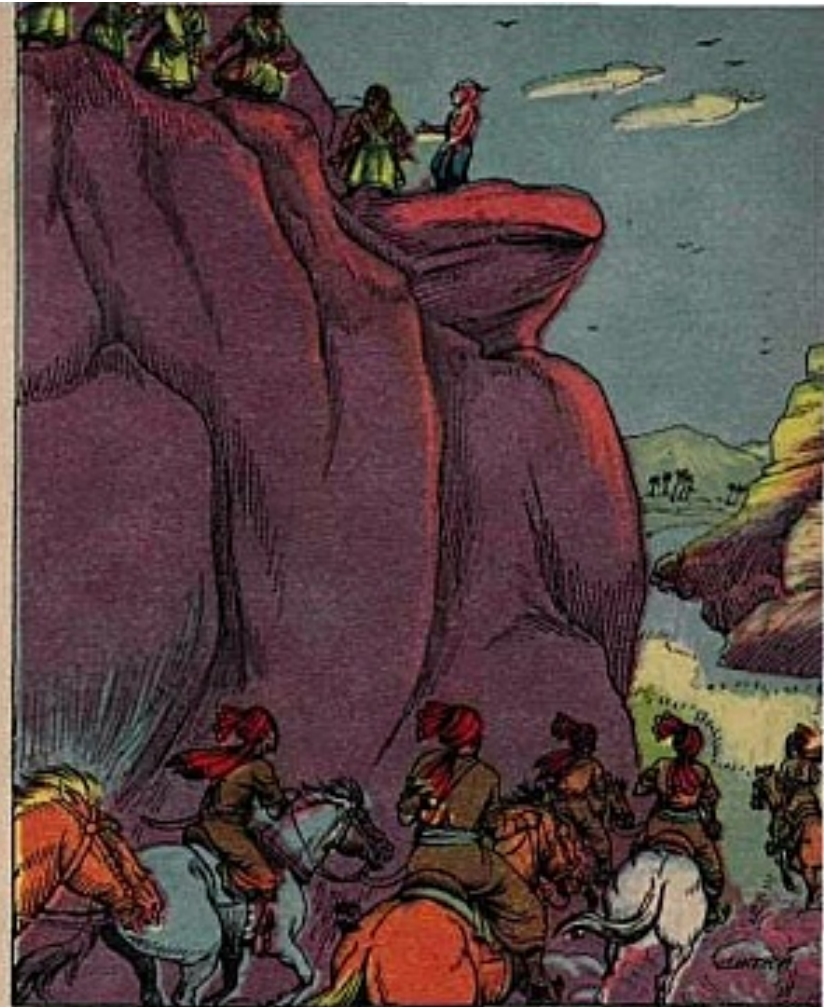
शत्रु के इतने सारे सैनिकों को जीतना हम से संभव नहीं है। हम जल्दी यहाँ से निकलेंगे और पहाड़ के बाज़ू में समतल प्रदेश में रहनेवाले हमारे ऊँटों पर सवार हो जंगल में चले जायेंगे। वहाँ पर हमें वे क्षत्रिय युवक और महाराजा समरबाहू भी दिखाई दे सकते हैं।"

"सिंह और बाघों के पिंजड़ों के पास रहनेवाले जंगली क्या हो गये? उनकी भी मदद मिले तो दुश्मन को जीतना कोई कठिन काम न होगा।" समरबाहू के एक अनुचर ने कहा।

"वे लोग हम से डरकर चुपचाप जंगल में भाग गये होंगे। एक साथ वे सब हम

पर हमला करने के पहले हमें भी यही काम करना है।" स्वर्णाचारी ने कहा।

"महा मंत्री, अगर हम भाग जायें तो क्या दुश्मन हमें कायर समझ कर..." यों समरबाहु का अनुचर कुछ कहने को हुआ, तभी ऊँटों पर पहरा देने गये हुए लोगों में से एक हाँफते स्वर्णाचारी के पास दौड़ आया और बोला—"महा मंत्री, दुश्मन के पाँच घुड़सवार हमारे ऊँटों के पास आ रहे थे, तब हम उन्हें भगाने को आगे बढ़े, वे लोग चुपचाप खिसक गये। मेरा संदेह है कि इस बार वे घोड़ों पर हम पर भारी हमला कर बैठेंगे।"

"संदेह की बात नहीं, वे लोग यही करनेवाले हैं। अगर उन लोगों ने हमारे ऊँटों को पकड़ लिया तो हम किसी काम के नहीं रह जायेंगे! हम उनके हाथों में बलि के पशुओं जैसे रह जायेंगे। इसलिए सब लोग ऊँटों के पास चले चलो।" यों कहते स्वर्णाचारी आगे आगे चलने लगा।

स्वर्णाचारी और समरबाहू के अनुचर ऊँटों के पास पहुँचे, उन पर सवार हो समतल प्रदेश के निकट गये, तब दो सौ गज की दूरी पर चालीस-पचास वीरपुर के घुड़सवार भाले व तलवार ऊपर उठाये उनकी ओर बढ़ते चले आ रहे थे। स्वर्णाचारी ने पल भर में निश्चय कर लिया कि दुश्मन को अंधाधुंध काटते रास्ता बनाते आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे मुड़कर भागना संभव नहीं है।

इसके तुरंत बाद उसने तलवार ऊपर उठाकर ललकारा—"हे उष्ट्रवीरो, मेरे साथ चलो। दुश्मन को पहाड़ी दुर्ग की देवी की बलि चढ़ायेंगे! महाराजा समरबाहू की जय!" यों कहते अपने ऊँट को आगे बढ़ाया।

उसी वक़्त वीरपुर के घुड़ सवार "वीरसिंह महाराज की जय!" चिल्लाते अपने घोड़ों को ललकार कर तेजी के साथ समरबाहू के अनुचरों पर हमला कर बैठे। (और है)
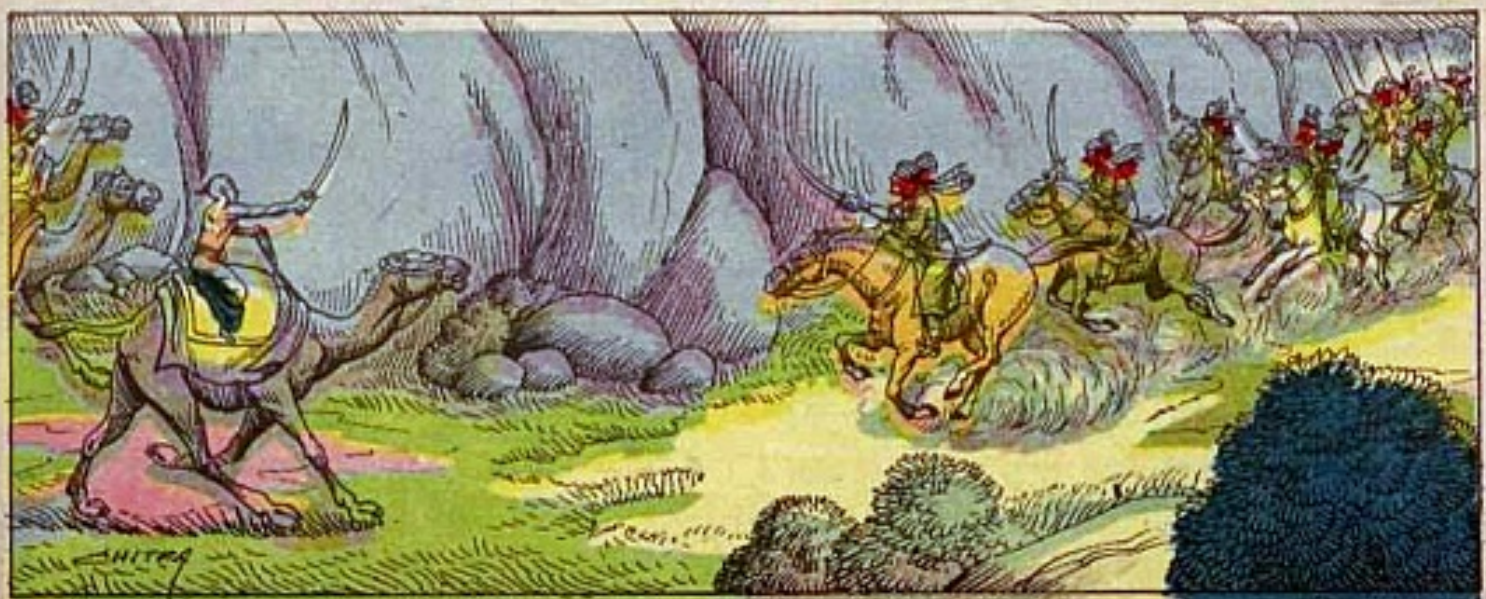
असली कारण

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया । पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति श्मशान की ओर चलने लगा । तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन्, तुम संपन्न व्यक्ति हो, इसलिए हो सकता है कि धन के लोभ में पड़कर यह श्रम न उठा रहे हो, लेकिन धन अत्यंत पाप पूर्ण है । वह अत्यंत स्नेह को भी विरोध में बदल सकता है । इसके प्रमाण स्वरूप मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ । श्रम को भुलाने के लिए सुनो । "

बेताल यों कहने लगा : साकेतपुर में गोप नामक एक गरीब जंगल में लकड़ी काटकर अपना परिवार चलाता था । एक दिन वह लकड़ी काटने जंगल में गया, तो किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी ।

गोप ने निकट जाकर देखा कि एक गड्ढे में कोई गिरा हुआ है । गोप ने उसे

बाहर निकला तो देखता क्या है कि वह कोई पराया नहीं, बल्कि उसके पड़ोसी मुहल्ले का निवासी रामभद्र नामक धनी है।

"मुझे डाकुओं ने लूटा और पीटकर इस गड्ढे में गिरा दिया। दो दिन से मैं बिना अन्न-जल के इस गड्ढे में तड़प रहा था, तुमने देवता की तरह आकर मेरी रक्षा की।" रामभद्र ने कहा।

गोप रामभद्र को ढोकर अपने नगर को लौटा और रामभद्र को उसके घर पहुँचाया। रामभद्र जल्द ही स्वस्थ हो गया। उसने एक दिन गोप को बुलाकर कहा-"मैं तुम्हारे इस उपकार को ज़िंदगी भर भूल नहीं सकता।" यों कहते वह थोड़ा सा धन गोप को देने को हुआ। लेकिन गोप ने धन लेने से अस्वीकार करते समझाया-"एक मनुष्य का दूसरे की सहायता करना साधारण कर्तव्य है। मैं सहायता का मूल्य लगाना नहीं चाहता।"

यह बात सुन रामभद्र बड़ा प्रसन्न हुआ। उस दिन से दोनों के बीच दोस्ती बढ़ती गयी। जब तब गोप को रुपयों की ज़रूरत पड़ती, पर वह दूसरों से कर्ज़ लेता, मगर कभी रामभद्र से माँगता न था। यह बात जानकर रामभद्र बड़ा दुखी होता। साथ ही, गोप की आर्थिक कठिनाइयों का ज़िक्र करके वह गोप के सामने अपने को धनी बताकर याद दिलाने से झिझकता था।

दोनों के बीच इस व्यवहार के कारण दोस्ती और बढ़ती गयी। उस नगर के अनेक लोग उन दोनों को आदर्श मित्र बताया करते थे। वे दोनों रोज़ थोड़ी देर बातचीत किये बिना सो नहीं पाते थे।

इस प्रकार कई साल बीत गये।

एक बार अचानक गोप की पत्नी बीमार पड़ गयी। उसकी बीमारी का इलाज करना साधारण वैद्यों के लिए नामुमकिन हो गया।

"इस बीमारी को धन वैद्य देवशर्मा ही दूर कर सकता है, बाक़ी लोगों से संभव न होगा।" सबने कहा।

गोप का कलेजा कांप उठा। उसने अपनी पत्नी के जीने की आशा छोड़ दी। क्यों कि देवशर्मा वैसे पत्थर में जान फूंक सकता है, लेकिन उसका दिल पत्थर के समान है। उसके हाथ से इलाज कराना हो तो सैकड़ों रुपये चाहिए। गोप जैसे लोगों के बुलाने पर देवशर्मा झाककर भी न देखेगा।

यह बात जान कर रामभद्र खुद देवशर्मा को बुला लाया। देवशर्मा ने आकर गोप की पत्नी की जांच की और कहा–"यह बीमारी अच्छी होगी। तीस दिन दवा देनी होगी। पर रोज़ पचास रुपये खर्च होंगे।"

"अच्छी बात है! आप इलाज़ शुरू कीजिए।" रामभद्र ने जवाब दिया।

एक महीने तक इलाज चलता रहा। गोप की पत्नी स्वस्थ हो गयी। वैद्य को पंद्रह सौ रुपये रामभद्र ने दे दिये।

एक ओर गोप को इस बात का संतोष था कि उसकी पत्नी मौत के मुँह से निकल आयी है, पर दूसरी ओर वह यह सोचकर दुखी होने लगा कि उसने मित्रता का दुरुपयोग किया है। गोप ने रामभद्र से कहा कि मैं किसी न किसी तरह यह कर्ज़ चुकाऊँगा, पर रामभद्र चुप रह गया।

इस व्यथा से मुक्त होने के लिए गोप ने कड़ी मेहनत करके ही सही रामभद्र के कर्ज़ को चुकाने का निश्चय कर लिया। मगर धीरे धीरे गोप को मालूम होने लगा कि कर्ज़ चुकाना मुमकिन

नहीं है। वह अपना पेट काट लेता, तब भी रुपये जमा न होते थे। उसे लगा कि पंद्रह सौ क्या, पंद्रह रुपये भी जमा करना संभव नहीं है; फिर भी उसने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा।

धन जमा करने के लिए अपने पति की परेशानी को देख उसकी पत्नी जब तब कहा करती–"तुम्हारी परेशानी को देख मेरा दिल फटा जा रहा है। तुम रामभद्र को आज तक अपने मित्र कहा करते थे, क्या वे अपने मित्र की मदद करना चाहे तो उनके लिए पंद्रह सौ रुपये कौन बड़ी बात है! इतनी सी भी मदद वे तुम्हारी नहीं कर सकते? क्या वे यह नहीं जानते कि खून-पसीना एक करने पर भी हम इतने रुपये जमा नहीं कर पायेंगे?"

गोप की पत्नी यही बात अड़ोस-पड़ोस की औरतों से कहा करती थी।

रोज़ अपनी पत्नी के मुँह से यह बात सुनते गोप को भी लगा कि उसकी पत्नी की बातें सही भी हैं। ज्यों ज्यों उसे अपनी कमज़ोरी मालूम होती गयी त्यों-त्यों उसे अपने मित्र पर क्रोध बढ़ता गया। उसने एक समय रामभद्र की जान बचायी थी, इसके लिए रामभद्र ने केवल शब्दों में कृतज्ञता प्रकट की है और किसी प्रकार से नहीं।

धीरे धीरे गोप अपने मित्र से मिलना कम करता गया। रामभद्र अगर कहीं दिखाई देता तो उसे अपना कर्ज याद आ जाता। गोप यही सोचता कि रामभद्र के मन में भी यही बात होगी।

गोप की पत्नी अड़ोस-पड़ोस वालों से जो बातें कहती थीं, वे बातें आखिर रामभद्र के कानों में भी पड़ गयीं। दोस्ती को तोड़ने में मजा पानेवाले व्यक्तियों ने आकर रामभद्र से बताया कि ये बातें गोप ने ही बतायी हैं। मगर जो बुद्धिमान थे, वे यह सोचकर रामभद्र के पास आये कि रामभद्र और गोप के बीच दोस्ती बिगड़ती जा रही है और

बोले–"तुम्हारा कर्ज़ चुकाने के लिए गोप नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहा है। तुम्हारा देखते रहना ठीक नहीं है।"

रामभद्र को इस बात का दुख हुआ कि गोप के कारण उसे लोगों की शिकायतें सुननी पड़ रही हैं। उसने कभी अपना कर्ज़ चुकाने के लिए गोप से अनुरोध नहीं किया। गोप ने ही स्वयं कर्ज़ चुकाने की बात बतायी। पर रामभद्र यह सोचकर चुप रहा कि अगर वह यह कहे कि कर्ज़ न लूँगा तो शायद वह दुखी हो जाय। अगर गोप यह कहता कि "मैं तुम्हारा कर्ज़ चुका नहीं सकता।" तो क्या वह कर्ज़ चुकाने पर ज़ोर देता! यह बात तो गोप ने कभी नहीं कही, उल्टे वह उसके विरुद्ध झूठा प्रचार कर रहा है! इन बातों से गोप के प्रति रामभद्र का दिल बिलकुल टूट गया। दोनों में एक दूसरे के प्रति वैमनस्य बढ़ता गया और आखिर दोनों प्रबल शत्रु बन बैठे।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, गोप और रामभद्र के बीच की गाढ़ी दोस्ती के टूटने का असली कारण क्या है? गोप की गरीबी है? या रामभद्र की जल्दबाजी अथवा उसका धन? इन सवालों का जवाब जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–" उनकी दोस्ती का शत्रुता में बदलने के लिए ये सब कोई कारण नहीं हैं। प्रारंभ से ही उनकी दोस्ती के बीच धन अवरोध बना ही रहा। दोनों के मन में यह दृढ़ विश्वास था कि धन मित्रता को नाश करेगा। इसलिए उन दोनों ने मित्रता को धन से दूर रखते हुए विकसित किया। अगर उनकी मैत्री सच्ची होती तो धन उनकी मैत्री में किसी भी रूप में अवरोध न बनता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

दया और क्रोध

एक गाँव में एक पंडित था। आसपास के किसी भी गाँव में शास्त्र संबंधी कोई संदेह पैदा होता तो उस पंडित के पास जाकर अपनी शंका का निवारण कर लेते।

पर वह महा पंडित परम दरिद्र था। एक जून खाने को मिलता तो दूसरे जून उपवास करता। उसकी यह हालत जानकर गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति ने पंडित की दरिद्रता को दूर करना चाहा। उसने राजा के पास जाकर कहा–"महाराज, आपके शासन में ऐसे महा पंडित को उपवास करते रहना आपके लिए कलंक की बात होगी।"

राजा नें उस प्रमुख व्यक्ति की बातों पर विश्वास करके अपने सिपाहियों के द्वारा सोने की मुद्राओं की एक गठरी पंडित के पास भेज दी। सिपाहियों ने जाकर कहा– "पंडितजी, आपकी विद्वत्ता के बारे में राजा ने सुना और आपके पास यह उपहार भेजा है; लीजिए।"

"राजा की कृपा का पात्र बनने के लिए मैंने कुछ नहीं किया है। इसलिए यह उपहार राजा को वापस दे दीजिए।" पंडित ने सिपाहियों से कहा।

इसके बाद पंडित की पत्नी ने उसकी निंदा की और पूछा–"तुमने ऐसा क्यों किया?"

"राजा ने किसी की बातें सुनकर मेरे पास उपहार भेज दिया है, फिर कभी किसीने मेरी निंदा कर दी तो तब राजा मेरा सिर भी कटवा सकते हैं न? इसलिए राजा दया और क्रोध में समान रूप से समर्थ होते हैं।" पंडित ने जवाब दिया।

धूर्त चमत्कार

एक गाँव में दो भाई थे। वे गरीब थे। बड़ा भाई ख़ूब मेहनत करना जानता था, मगर वह अक़्लमंद नहीं था। छोटा भाई बहुत तेज़ और चालाक था। वह सब काम जानता था।

नौकरी की खोज में दोनों अपने गाँव को छोड़ राज्य की राजधानी में पहुँचे। दूसरे दिन सवेरे बड़ा भाई यह कहकर चल पड़ा कि वह राजा के पास जाकर कोई नौकरी माँग लेगा।

"शाम तक लौट आओ।" छोटे भाई ने बड़े भाई को सचेत किया।

बड़ा भाई जब राजमहल के पास पहुँचा, तब राजा बगीचे में टहल रहा था। राजा ने बड़े भाई को देख पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हें क्या चाहिए?"

बड़े भाई ने हाथ जोड़कर जवाब दिया—"महाराज, मैं और मेरा छोटा भाई अनाथ हैं। काम की खोज में इस नगर में आये हैं। हमें कोई काम दिलायेंगे तो आपकी कृपा को कभी न भूलेंगे।"

"तुम को मैं काम दूँगा। जिम्मेदारी के साथ करोगे न?" राजा ने पूछा।

"ज़रूर करूँगा, महाराज!" बड़े भाई ने कहा।

राजा उसे राजमहल में ले गया, एक सुंदर सफ़ेद बकरी को दिखाकर कहा—"इसे तुम ले जाओ, दिन भर जंगल में घुमाओ, लेकिन सूरज के डूबने के पहले ही लाकर मुझे सौंप दो। लेकिन एक बात याद रखो; पूरब में जो टीला है, उसे पार मत करो। मेरे कहे अनुसार न करोगे तो तुम को कड़ी सज़ा दूँगा।"

बड़े भाई ने राजा की बात मान ली। बकरी को बगल में दबाया। खाने की पोटली को लेकर जंगल की ओर चल

लता भुवाल्का

पड़ा। जंगल में जाते ही बड़े भाई ने बकरी को उतार दिया; वह छलाँग मारते उछल-कूद करने लगी। बड़ा भाई भी उसके पीछे दौड़ता रहा। इस तरह दौड़ते-दौड़ते दोनों जंगल में बहुत दूर निकल गये।

दुपहर के वक़्त जब बड़ा भाई खाने लगा तब बकरी ने भी वही खाया। इसके बाद दोनों पूरब के टीले के पास पहुँचे। उस टीले पर फलों के पेड़ थे।

राजा की चेतावनी भूलकर बड़ा भाई टीले पर चढ़ा और तरह-तरह के फल तोड़कर खाया। फलों का रस उसके हाथों में छिपक गया था। उसने हाथ-मुँह धोना चाहा, पर समीप में कहीं पानी न था।

लेकिन बड़े भाई को टीले के उस पार एक झोंपड़ी दिखाई दी। वह बकरी को उठाकर उस झोंपड़ी की ओर जाने लगा, तब बकरी चिल्लाते छटपटाने लगी। मगर बड़ा भाई मंद बुद्धिवाला था; इसलिए बकरी के भाव को समझे बिना वह सीधे झोंपड़ी के पास पहुँचा।

उस झोंपड़ी के आगे एक भयंकर आकृति वाला बैठा था। उसका सिर गंजा था। उसकी आँखें शीशे की तरह चमक रही थीं। बित्ते भर लंबी उसकी दाढ़ी थी। उसकी बगल में बकरी के कच्चे माँस के टुकड़े और उन्हें चुभोकर जलाने के लिए लोहे की एक छड़ी थी। वह चूल्हा जलाने के प्रयत्न में था।

उसने बड़े भाई को देख कहा—"अबे लड़के, आओ, जरा चूल्हा जलाके तो जाओ।"

"मुझे अंधेरा फैलने के पहले लौट जाना है। पानी की खोज में आया हूँ।" बड़े भाई ने कहा। बकरी चिल्लाते ज़मीन और आसमान को एक करते छटपटाने लगी।

उस भयंकर आकृतिवाले ने उठकर बकरी के कान ऐंठ दिये और कहा—"अरी, अभी तक तेरा घमण्ड चूर नहीं हुआ?" फिर उसने बड़े भाई से कहा—"यह बकरी बड़ी घमण्डी है। यह तुम्हारी बात नहीं

सुनेगी। तुम इसे झोंपड़ी में डाल दो। उसका दर्वाज़ा बंद करके चूल्हा जला दो। में तुम्हें पानी ला देता हूँ।" इसके बाद वह बड़े भाई को एक झोंपड़ी दिखाकर पानी लाने गया।

बड़ा भाई लाचर हो बकरी को झोंपड़ी में डाल चूल्हा जलाने को बैठ गया। वह चूल्हा जलाना जानता न था। चूल्हा जलाते चारों ओर अंधेरा फैल गया। तब वह विकृत आदमी लोटे से पानी ले आया।

बड़े भाई ने जल्दी-जल्दी हाथ मुँह साफ़ किये। बकरी को ले जाने के ख्याल से उसने दर्वाजा खोला तो देखता क्या है कि वहाँ पर बकरी नहीं है, बल्कि विकृत आकृति वाली एक औरत बैठी हुई है। उस औरत को देखते ही बड़ा भाई डर गया—"बाप रे बाप, भूत है।" चिल्लाते भाग खड़ा हुआ।

रात को वह राजा के पास पहुँचकर बोला—"महाराज, वह मामूली बकरी नहीं है, भूत है।" इसके बाद उसने सारी कहानी सुनायी।

सारी बातें सुन क्रोध में आकर राजा ने आदेश दिया—"इस बदमाश को ले जाकर तहखाने में डाल दो।" सिपाहियों ने बड़े भाई को ले जाकर अंधेरे तहखाने में डाल दिया। अंधेरा फैलने के बाद भी अपने बड़े भाई को लौटते न देख छोटा भाई घबरा गया और वह तुरंत राजा के पास पहुँचा। राजा को जब मालूम हुआ कि यह भी उस बदमाश का छोटा भाई है, तब राजा उस पर भी नाराज़ हो उठा।

छोटे भाई ने शांति पूर्वक राजा से सारी बातें जानकर कहा—"महाराज, मुझे इसमें कोई रहस्य मालूम होता है। यह रहस्य अगर आप मुझे बता दे तो मैं बकरी को लाकर आप को सौंप दूंगा और अपने बड़े भाई को छुड़ा लूंगा।"

उस युवक की बातों से राजा को लगा कि यह कोई समर्थ व्यक्ति है। उसे अपने गुप्त कमरे में ले जाकर बकरी का सारा वृत्तांत राजा ने उसे सुनाया।

राजा के बहुत समय बाद एक लड़की पैदा हुई थी। राजा ने उसे अपना पुत्र मान करें पाला-पोसा। वह शिकार खेलने और जंगल में घूमने का ज्यादा शौक रखती थी। राजा के साथ अक्सर वह शिकार खेलने भी जाया करती थी।

एक दिन राजा और राजकुमारी शिकार खेलते अपने परिवार से दूर निकल गये। पूरब की दिशा में टीले को भी पार कर गये। वहाँ पर उन्हें एक झोंपड़ी दिखाई दी। पानी की खोज में उस झोंपड़ी के पास पहुँचे।

झोंपड़ी के बाहर एक विकृत आकृति वाला बैठा था। वह लोहे की एक छड़ी में बकरी के माँस के टुकड़े चुभोकर जलाकर खा रहा था। राजकुमारी को उसे तथा बकरी के माँस को देखते ही कै होने लगी। वह बकरी के माँस से घृणा करती थी।

"यहाँ पर क्या पीने का पानी मिलेगा?" राजा ने उस व्यक्ति से पूछा।

उस व्यक्ति ने जवाब दिये बिना ही सिर उठाकर दोनों को देखा। भीतर जाकर पानी ले आया और राजा से पूछा— "क्या यह लड़की तुम्हारी पुत्री है? बड़ी खूबसूरत है! इसे मुझे दे दो!"

"अरे, तुम इस कमबख्त बकरी का माँस खानेवाले राक्षस जैसे लगते हो! क्या तुम मुझे चाहते हो?" राजकुमारी ने कहा।

ये बातें सुन उसकी आँखें लाल हो गयीं। इस पर उसने बकरी के माँस के टुकड़े में चुभोई गयी लोहे की छड़ी को राजकुमारी के सिर से छुआकर कहा— "तुम्हें बकरी के माँस से घृणा है, इसलिए तुम दिन भर बकरी बनी रहोगी और मुझे विकृत राक्षस बताया, इस अपराध में तुम रात भर मुझ से भी ज्यादा विकृत रूप लिये रहोगी।" दाढ़ी को संवारते उसने ये शब्द कहे थे।

वह एक जादूगर था। राजकुमारी उसी वक़्त बकरी में बदल गयी। उस दिन से लेकर वह दिन में बकरी के रूप में

और रात के वक़्त भयंकर पिशाचिनी की तरह रहती आयी है। रात के वक़्त वह किसी की आँखों में न पड़े, इस ख़्याल से राजा बहुत सतर्क रहा करता था। तब तक राजकुमारी विवाह के योग्य हो गयी थी। पर उस धूर्त मांत्रिक ने राजकुमारी के विवाह होने से और असंभव कर दिया। उसकी सारी शक्तियाँ उसकी दाढ़ी और लोहे की छड़ी में हैं।

छोटे भाई ने राजा के मुँह से ये सारी बातें सुनीं। उसने थोड़ी देर तक गंभीर होकर सोचा और कहा–"आज रात को राजकुमारी के लिए कोई खतरा नहीं है। वह भूतकी के रूप में रहेगी, पर सवेरा होने के पहले उसकी रक्षा नहीं कर पायेंगे तो खतरा है। आप मुझे थोड़ा सा गुग्गुल तथा एक मोटी बकरी दिला दिलाइये।"

राजा ने वैसा ही किया। छोटा भाई उन्हें लेकर उसी रात को पूरबी टीले के उस पार पहुँचा।

जादूगर झोंपड़ी के आगे बैठकर एक हाथ से माँस को जलाते, दूसरे हाथ से शराब पीते, बड़ी खुशी में था। छोटा भाई उसके सामने जाकर रुक गया और बोला–"मामा, माँस की बू आती है!"

"आओ रे दामाद! कहीं से तुमने मोटी बकरी हड़प ली है?" जादूगर ने कहा।

"तुम्हारे ही वास्ते! तुमको बकरियाँ बहुत पसंद हैं न?" छोटे ने जवाब दिया।

"तब तो देरी क्यों? उसे जल्दी काट दो! यह माँस बड़ा फीका लगता है!" जादूगर ने चट से जवाब दिया।

"यही तुम गलत बताते हो! हर बकरी का माँस अच्छा होता है। लेकिन तुम्हें ठीक से जलाना नहीं आता। तुम ज्यादा जलाकर राख कर देते हो! फिर स्वादिष्ट कैसे होगा? देखो, मैं जलाकर दिखाला हूँ।" छोटे भाई ने समझाया।

"तब तो तुम जलाकर दिखा दो। मैं बैठकर आराम करता हूँ।" यों कहते

जादूगर छड़ी को छोटे भाई के हाथ देकर दूर जा बैठा।

छोटा भाई कच्चे माँस का एक टुकड़ा लोहे की छड़ी में चुभोकर जलाने लगा। जल्द ही उसके भीतर से अच्छी गंध आने लगी।

"अरे दामाद! सचमुच तुम अच्छी तरह से रसोई बनाना जानते हो! वह टुकड़ा जरा इधर फेंक दो।" जादूगर ने कहा।

"जल्दी न मचाओ, थोड़ा और जलाना है। गंध अच्छी लगती है तो और निकट आकर सूँघ लो।" छोटे भाई ने कहा।

जादूगर निकट आया। चूल्हे पर मुँह रखकर आँखें मूँदकर खुशी से सुगंध सूँघने लगा। उसी वक़्त छोटे भाई ने चूल्हे में गुग्गुल डाल दिया, फिर क्या था, भभक कर लपटें उठीं, जादूगर की दाढ़ी जल गयी। दूसरे क्षण छोटे भाई ने उसके सिर पर छड़ी से मारा और कहा—"तुम बकरा बनकर अपने रास्ते चले जाओ।"

तुरंत जादूगर बकरा बनकर चिल्लाते जंगल की ओर भाग गया।

जादूगर की शक्तियों के जाते ही राजकुमारी को पहला रूप प्राप्त हुआ। उसने छोटे भाई के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

छोटे भाई ने जादूगर की छड़ी झोंपड़ी में डाल दी। झोंपड़ी में आग लगाकर, राजकुमारी को साथ ले सवेरे होने तक राजमहल को लौट आया।

बहुत समय बाद राजा अपनी पुत्री को पूर्व रूप में देख अत्यंत प्रसन्न हुआ। राजकुमारी ने कभी यह निश्चय कर लिया था कि जो युवक उसे अपने पूर्व रूप को लायगा, उसी के साथ वह शादी करेगी। उसकी इच्छा के अनुसार राजा ने छोटे भाई के साथ राजकुमारी की शादी की और यह घोषणा भी की कि उसके अनंतर छोटा भाई राजा बनेगा। इसके बाद बड़े भाई को जेल से छुड़ाया गया। वह भी अपने छोटे भाई के साथ रहने लगा।

सही जवाब

एक गाँव में रंगनाथ और राधाबाई नामक दंपति थे। वे हर छोटी बात में झगड़ते थे। उनके झगड़े का कारण सुनने पर गाँव वालों को आश्चर्य होता; कभी उन्हें हंसी भी आ जाती थी। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने उन्हें समझाया, मगर कोई फ़ायदा न रहा।

कई साल बाद उस दंपति के एक लड़का हुआ। माँ-बाप दोनों लड़के को अपने प्राणों से ज़्यादा चाहते थे। इस कारण से भी उनके बीच लड़ाई-झगड़े कम नहीं हुए। लड़के का नाम रामनाथ था। वह ज्यों ज्यों बढ़ता गया, त्यों त्यों उसे अपने माँ-बाप के झगड़े अच्छे न लगे। उनके झगड़े के बारे में गाँव वालों के हंसते देख रामनाथ सहन नहीं कर पाया। पर उसकी समझ में न आया कि उन्हें किस तरह रास्ते पर लावे!

रामनाथ बारह साल का हो गया। उसी उम्र में उसके लिए अपने माँ-बाप का झगड़ा एक समस्या बन गया। वह मवेशियों को चराने जंगल में ले जाता तो उसे वहाँ पर भी यही चिंता सताने लगती।

एक दिन उस गाँव का ओझा उधर से आ निकला। रामनाथ को चिंतित देख पूछा–"बेटा, तुम क्यों दुखी हो?"

रामनाथ ने अपने माता-पिता के झगड़े का समाचार सुना कर कहा–"जब तक मेरे माँ-बाप लड़ते रहेंगे तब तक मेरी चिंता दूर नहीं होगी।"

"बेटा, तुम चिंता न करो। तुम्हारे माँ-बाप को अगर बदलना है, तो तुम्हीं बदल सकते हो। इसके लिए मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ। मेरे कहे मुताबिक़ करो।" इन शब्दों के साथ ओझा ने
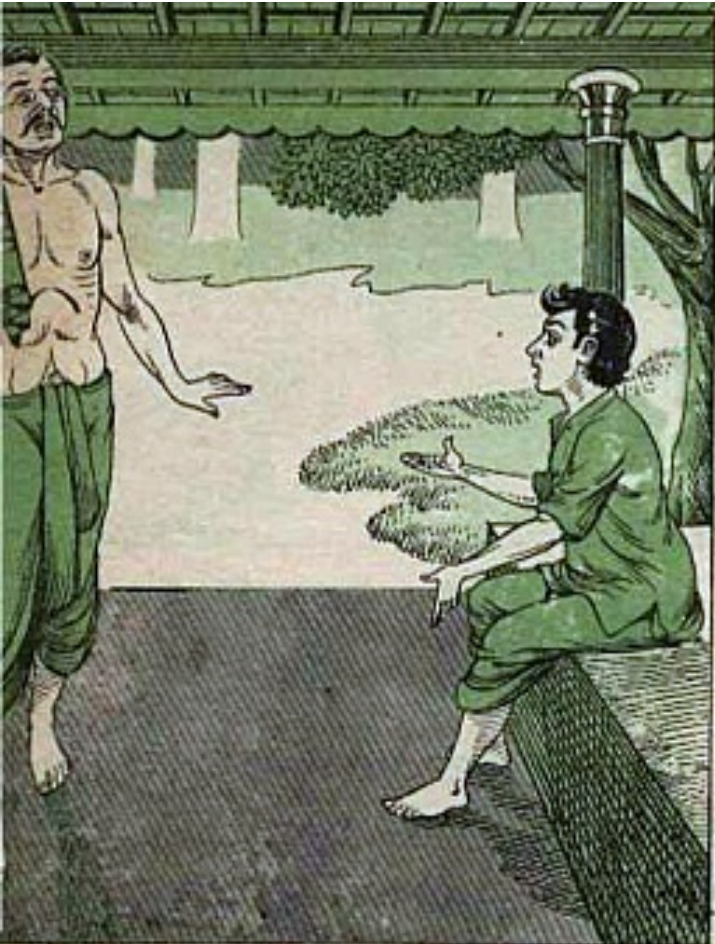
रामनाथ के कान में कुछ बताया और वह अपने रास्ते चला गया।

उस दिन शाम को मवेशियों को लेकर घर लौटते ही रामनाथ ने अपनी माता से कहा—"माँ, मैंने तुम से सवेरे कहा था कि मेरा कुर्ता धोकर सुखा दे, लेकिन तुमको याद ही कहाँ रहती है? तुम्हें शायद यह बात भी याद नहीं है कि तुम्हारा एक बेटा भी है!"

अपने लड़के का यह हाल देख राधाबाई चकित रह गयी। कभी माँ के विरुद्ध कुछ न कहनेवाले बेटे को आज क्या हो गया है? उसकी समझ में नहीं आया कि वह झूठ क्यों बोलता है? उसने कुर्ता धोने के लिए उससे कहा तक नहीं। उसमें क्यों यह परिवर्तन हो गया है। यह सोचते वह दाल-नमक वगैरह लाने दूकान की ओर चल पड़ी।

थोड़ी देर बाद खेत से रंगनाथ लौट आया। मुंह बनाये बैठे बेटे को देख उसने पूछा—"बेटे, क्या तबीयत ठीक नहीं है? परेशान मालूम होते हो, क्या बात है?"

"तबीयत ठीक क्यों नहीं? चार लोगों के बीच जाने में मुझे शर्म मालूम होती है?" रामनाथ ने जवाब दिया।

"शर्म लगने की क्या बात है?" बाप ने फिर पूछा।

"मेरे लिए अच्छे कपड़े नहीं हैं। धूप और बरसात में बिना जूते के घूमना है। मैं अकेला लड़का हूँ। क्या मेरे साथ ऐसा ही रूखा व्यवहार किया जाता है?" रामनाथ खीझ उठा।

ये बातें सुन रंगनाथ का चेहरा फीका पड़ गया। रामनाथ ने कभी मुंह खोल कर कुछ न मांगा था! पिता के सामने ऐसी बातें कभी की तक न थीं, आज उसे क्या हो गया है!

इतने में राधाबाई दूकान से लौट आयी। उसने बाप-बेटे की बातचीत भी सुन ली। बाप के साथ भी बेटा आज खुश नहीं है। उस रात को भोजन करते

समय भी रामनाथ ने माँ-बाप को खूब डांटा, सताया। वह ओझा की सलाह के अनुसार यह नाटक रच रह था। एक हफ़्ता बीत गया, पर रामनाथ में कोई परिरर्तन न आया।

राधाबाई ने अपने पति से कहा–"बेटे में शायद कोई भूत सवार हो गया है! कोई मंत्र-तंत्र फुंकवा देंगे।"

"मंत्र-तंत्र से क्या होता है? इसको दवा दिलानी है।" रंगनाथ ने कहा।

"इस बीमारी के लिए दवा कौन देगा? ओझा को बुला लेंगे तो मंत्र फूंककर पल भर में भूत को भगा देगा।" राधाबाई ने समझाया।

"वैद्य ही इसकी बीमारी का पता लगा सकता है।" रंगनाथ ने साफ़ कहा।

माँ-बाप के बीच देर तक झगड़ा चलता रहा, आखिर रामनाथ ने कहा–"मैं अमुख ओझा के यहाँ तो आ सकता हूँ।"

माँ-बाप यह सोचकर खुश हुए कि कम से कम बेटे ने किसी के पास जाने से इनकार नहीं किया। उसे उस ओझा के यहाँ ले गये।

माँ-बाप के मुँह से सारी बातें सुनकर ओझा ने कहा–"तुम्हारे बेटे का इलाज़ करना कोई बड़ी बात नहीं है। मैं तुम दोनों से अलग-अलग एक सवाल करूँगा। उस सवाल का तुम्हें सही जवाब देना

होगा। तब मैं तुम्हारे लड़के के शरीर से भूत को बड़ी आसानी से भगा सकता हूँ।"

इसके बाद ओझा ने पहले रंगनाथ को अलग बुलाकर पूछा–"क्या रामनाथ तुम्हारा पुत्र है?" इस सवाल को सुन रंगनाथ अचरज में आ गया और बोला–"जी हाँ, यह मेरा ही बेटा है।"

इसके बाद ओझा ने रंगनाथ को बाहर भेजा और राधाबाई को बुलाकर यही सवाल किया–"क्या रामनाथ तुम्हारा ही बेटा है?" उसने भी रंगनाथ के जैसे यही कहा–"जी हाँ!"

इसके बाद ओझा ने उन दोनों को बुलाकर समझाया–"तुम दोनों ने सही

जवाब नहीं दिया। एक हफ़्ते बाद सही जवाब सोचकर आ जाओ।"

एक हफ़्ता बीत गया। दोनों दंपति ओझा के यहाँ आये। उसने इस बार भी दोनों से अलग अलग यही सवाल किया।

इस बार रंगनाथ ने मानो अपनी अक्लमंदी का परिचय देने के ख्याल से कहा–"वह मेरी पत्नी का बेटा है।"

पर राधाबाई ने जवाब दिया–"रामनाथ मेरा बेटा है।"

इस बार भी ओझा ने मुस्कुरा कर कहा–"तुम दोनों ने सही जवाब नहीं दिया। और खूब सोचो, फिर एक हफ़्ते के बाद आ जाओ।"

इधर रामनाथ का पागलपन दिन ब दिन बढ़ता जा रहा था। इस बार रंगनाथ और राधाबाई ने परस्पर विचार किया और यह निर्णय पर पहुँचे कि ओझा को कौन सा जवाब देना है।

एक हफ़्ता बाद दोनों ओझा के पास पहुँचे। इस बार दोनों ने ओझा से यही बताया–"रामनाथ हमारा बेटा है।"

ओझा ने हँसकर समझाया–"इस बार तुम दोनों ने सही जवाब दिया है। इतने दिन बाद तुम लोगों का भूत छूट गया है। तुम दोनों ने आपस में चर्चा की। पति-पत्नी एक दूसरे के साथ आपस में सलाह-मशविरा करके एक निर्णय पर पहुँचे बिना जिंदगी भर लड़ते-झगड़ते रहें तो कैसे काम चलेगा? रामनाथ को कुछ नहीं हुआ है। मेरी सलाह पर ही उसने यह नाटक रचा है। तुम दोनों एक दूसरे का हित सोचते सुख के साथ रहो। रामनाथ रत्न जैसा लड़का है। तुम दोनों के झगड़े के कारण उसे आज तक सुख नहीं मिला। वह दुखी था।" यों डाँट दिया।

रंगनाथ और राधाबाई को इससे एक अच्छा सबक़ मिला। वे दोनों आपस में लड़ना छोड़कर एक दूसरे की सलाह लेते सुख पूर्वक अपने दिन बिताने लगे। रामनाथ भी अपने माता-पिता को लड़ते न देख बड़ा खुश रहने लगा।

सत्यकाम का जादू

हीरागढ़ देश में हरवर्मा नामक एक व्यापारी था। वह ईमानदार तथा धर्मात्मा भी था। ज्यादा लाभ लिये बिना थोड़े से लाभ पर अपना माल बेचता। माल में मिलावट करना और माल गुप्त रूप से संग्रह करना उसे पसंद न था। न्यायपूर्वक ही उसने अपार धन कमाया। जनता का उस पर तथा उसके द्वारा बेचे जानेवाले माल पर अपार विश्वास था, इस वजह से दूकान के पास हमेशा भीड़ लगी रहती थी।

बुढ़ापे में हरवर्मा का देहांत हो गया तो उसका इकलौता बेटा शंकावर्मा उसकी जायदाद का वारिस बना। शंकावर्मा स्वभाव में अपने पिता के बिलकुल विरुद्ध था। वह स्वार्थी और लोभी था। फिर भी वह चालाक था, इस कारण वह सबके साथ आदर पूर्वक व्यवहार करता, और भीतर ही भीतर कुतंत्र रचता। उसकी पत्नी रंगीला पड़ोसी राज्य के धूर्त व्यापारी की बेटी थी। उसका स्वभाव भी कुटिल था। वह शंकावर्मा को प्रोत्साहन देती थी।

हीरागढ़ देश सुसंपन्न था। उसमें अच्छी पैदावर होती, जनता किसी प्रकार के अभाव के बिना सुख पूर्वक दिन बिता देती थी।

एक वर्ष फसल खेतों पर थी। तभी बाहर से कुछ व्यापारियों ने आकर धान को ज्यादा दाम पर खरीद लिया। किसानों को अपने धान का अच्छा भाव मिला, इसलिए वे खुश हुए, और सब ने अपनी पैदावर का अधिकांश भाग ज्यादा दाम पर बेच दिया। अनाज खरीदने के लिए जैसे लोग बाहर से आये, वैसे गायब भी हो गये।

ए. सी. सरकार. जादूगर

थोड़े ही महीनों में दूकानों से सारा धान गायब हो गया। सारे देश में धान का अकाल पड़ा। राजा ने राज्य के सारे भण्डार खोल दिये। मगर भूख से तड़पनेवाली जनता के लिए वह अनाज पर्याप्त न था।

अकाल ने विकट रूप धारण किया। सारे देश में भूख के मारे लोग तड़प-तड़प कर मरने लगे। राजा असहाय हो गया। जनता की इस बुरी हालत पर वह बड़ा दुखी हो गया। इससे बढ़कर वह कुछ नहीं कर पाता था।

इस हालत में शंकावर्मा एक दिन राजा को देखने आया। उसने राजा से पूछा—"महाराज, मैं आपकी कैसी सहायता कर सकता हूँ?"

"हमारी प्रजा की तुम मदद कर सकते हो। फिर से पैदावार होने तक इस अकाल की समस्या को हल करने का कोई उपाय हो तो बतला दो। मैं प्रजा के दुख को देख नहीं पाता हूँ।" राजा ने कहा।

"मैं आपका सेवक हूँ, सोचने के लिए मुझे दो दिन की मोहलत दीजिए। अगर मैं राज्य की थोड़ी-बहुत मदद कर सकूँगा तो मुझे भी बड़ी प्रसन्नता होगी।" शंकावर्मा ने जवाब दिया।

तीसरे दिन उसने फिर राजा के दर्शन करके कहा—"महाराज, हम अपने पड़ोसी देश शक्तिगढ़ से चावल ला सकते हैं। उनके और हमारे बीच सीमा संबंधी विवाद के कारण वैमनस्य पैदा हो गया है, फिर भी आप चाहेंगे तो शक्तिगढ़ के राजा हमारी सहायता कर सकते हैं।"

"यह असंभव है। यह बात तो हमारी प्रतिष्ठा की है। मैं अपने शत्रु से याचना नहीं कर सकता।" राजा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

शंकावर्मा ने क्षण भर सोचकर पश्चात्ताप पूर्ण स्वर में कहा—"आपका कहना सत्य है, महाराज! मैं मंदबुद्धिवाला हूँ। यह

बात भूलकर मैंने सुझाव दिया कि प्रतिष्ठा प्राणों से बढ़कर है। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं एक और सुझाव देता हूँ। वह आपको अवश्य पसंद आयेगा। इससे हम अपने शत्रु का भी नुक़सान कर सकते हैं।"

"इसमें कौन आपत्ति होगी?" राजा ने कहा।

"तब तो एक पंथ दो काज हो सकते हैं। मैं शक्तिगढ़ में रहनेवाले अपने मामा की मदद से हमारी जनता के लिए तीन-चार महीनों के लिए काम दे सकनेवाला अनाज गुप्त रूप से आयात करवा दूंगा। मेरा ख़्याल है कि इससे जो अतिरिक्त खर्च होगा, उसे उठाने में आप संकोच नहीं करेंगे।" शंकावर्मा ने कहा।

"गुप्त रूप से आयात करना उचित नहीं है, फिर भी हमारी प्रजा के लिए अनाज की नितांत आवश्यकता है। साथ ही हम शत्रु का नुक़सान भी करनेवाले होते हैं। इसलिए मैं तुम्हारे सुझाव का समर्थन करता हूँ। हाँ, यह बताओ कि इस प्रकार आयात करनेवाले धान का मूल्य लगभग कितना हो सकता है?" राजा ने पूछा।

"साधारण मूल्य से कम से कम चार गुना अधिक होगा।" शंकावर्मा ने कहा।
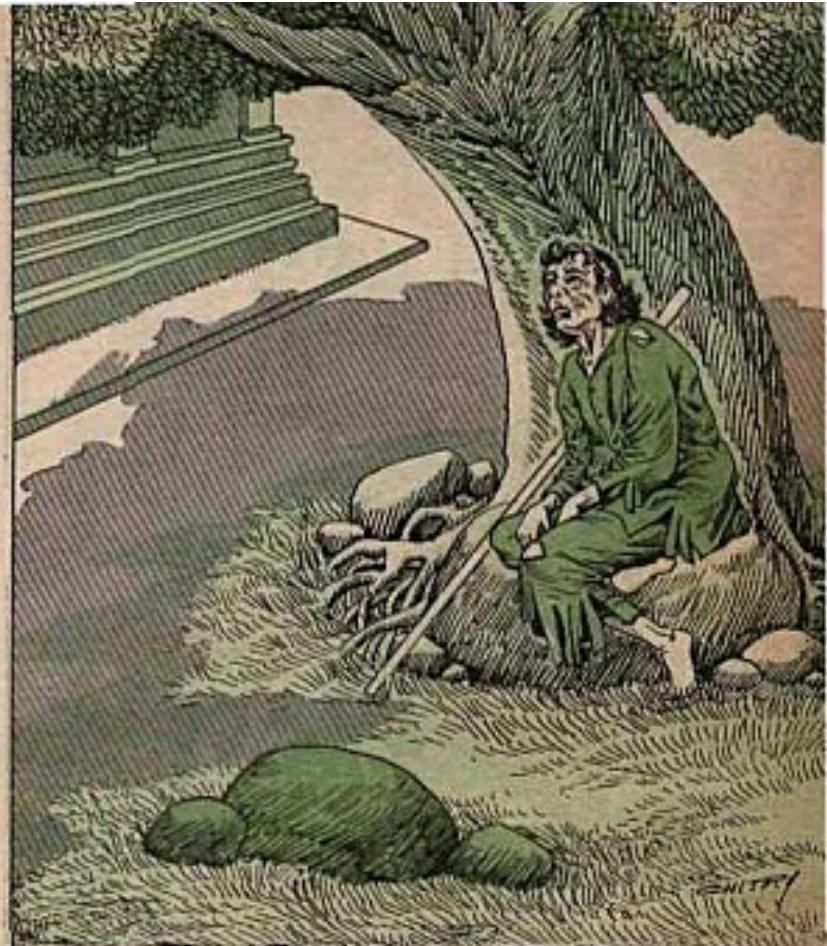
"यह मूल्य बहुत ज्यादा है न?" राजा ने शंका प्रकट की।

"महाराज, गुप्त रूप से आयात करनेवाले माल का दाम हमेशा ज्यादा होता है।" शंकावर्मा ने दांत दिखाते हुए कहा।

शंकावर्मा का मकान नगर के बाहर था। वह एक विशाल महल था जो उसके पिता के द्वारा बनवाया गया था। महल के चारों तरफ़ एक विशाल अहाता, उसमें तालाब, बगीचा और एक मंदिर भी था। मंदिर चहार दीवारी के बाहर था। मंदिर के समीप में आम, जामून आदि के पेड़ों से भरा एक छोटा-सा बगीचा था।

शंकावर्मा ने पहली बार जिस दिन राजा के दर्शन किये थे, उस दिन मंदिर के प्रांगण में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। उसका नाम सत्यकाम था। वह वैसे देहाती था, पर बहुत ही बुद्धिमान और विवेकशील था। उसकी पत्नी और बच्चे अकाल के शिकार हो मर गये थे। वह अपने घर को छोड़ पागल की तरह घूमते-घूमते उस दिन उस मंदिर के प्रांगण में पहुँच गया था।

सत्यकाम एक पेड़ से सटकर बैठे अपनी बुरी हालत पर विचार कर रहा था, तभी उसने देखा कि मंदिर के चारों तरफ़ बने चबूतरे पर से चींटों की पंक्तियाँ चली आ रही हैं। हर चींटी की नाक में चावल का एक दाना चिपका हुआ था। इसे देखते ही सत्यकाम का दिमाग तेज़ी से काम करने लगा। वह जान गया कि वह मंदिर देश के एक प्रसिद्ध व्यापारी के द्वारा निर्मित है। उसने एक बाँस हाथ में ली, लंगड़े की तरह लंगड़ाते बाँस को चबूतरे पर मारता गया। बाँस की ध्वनि से उसने भांप लिया कि चबूतरे के नीचे कोई तहख़ाना है।

"गुप्त तहख़ाने में चावल भरा हुआ है। जनता खाने के लिए तरस रही है। इस रहस्य को प्रकट करना है।" सत्यकाम ने मन में सोचा।

सत्यकाम ने प्रधान मंत्री के पास जाकर कहा—"महामंत्रीजी, शंकावर्मा के मंदिर के नीचे गुप्त तहख़ाने में बहुत-सा चावल भरा हुआ है।"

"तुम्हारा दिमाग नो ख़राब नहीं हो गया? शंकावर्मा तो बुजुर्ग हैं। उनके बारे में सपने में भी बुरा मत सोचो। चलो, भूल से भी ऐसी बातें अपने मुँह से मत निकालो।" प्रधान मंत्री ने डाँट कर कहा।

सत्यकाम ने कोत्वाल के पास जाकर बताया। वहाँ 'पर भी उसे वही जवाब मिला। तब उसने पीड़ित प्रजा के पास

जाकर यह रहस्य खोलने का निश्चय कर लिया।

दो दिन बीत गये। तीसरे दिन शाम को वह एक बरगद के नीचे जा बैठा। वहाँ पर कई कंगाल आ पहुँचे। सब लोग प्राणों के साथ रहनेवाले कंकाल से लग रहे थे। उन जीवित कंकालों को शंकावर्मा के बड़प्पन के बारे में चर्चा करते सुन सत्यकाम चकित रह गया। उसने उनके निकट जाकर पूछा—"ये शंकावर्मा कौन हैं? वे कैसे आदमी हैं?"

"वे देवता जैसे आदमी हैं। दयालू हैं। दाता हैं। सब को दान देते हैं।" एक आदमी ने कहा।

"क्या वे अन्न का भी दान करते हैं?" सत्यकाम ने पूछा।

"नहीं, धन देते हैं।" उस व्यक्ति ने कहा।

"धन किसलिए? जलाने के लिए? दूकान में चावल हो, तब न? इसीलिए हम कंद-मूल व पत्ते खाकर धीरे-धीरे मर रहे हैं। क्या वे हमारे जीने के लिए भी कुछ करते हैं?" सत्यकाम ने उससे पूछा।

इस बीच उनकी बातचीत सुनने के लिए बाक़ी लोग वहाँ पहुँचे। सत्यकाम के सवाल का सब ने अपने अपने ढंग से जवाब दिया।
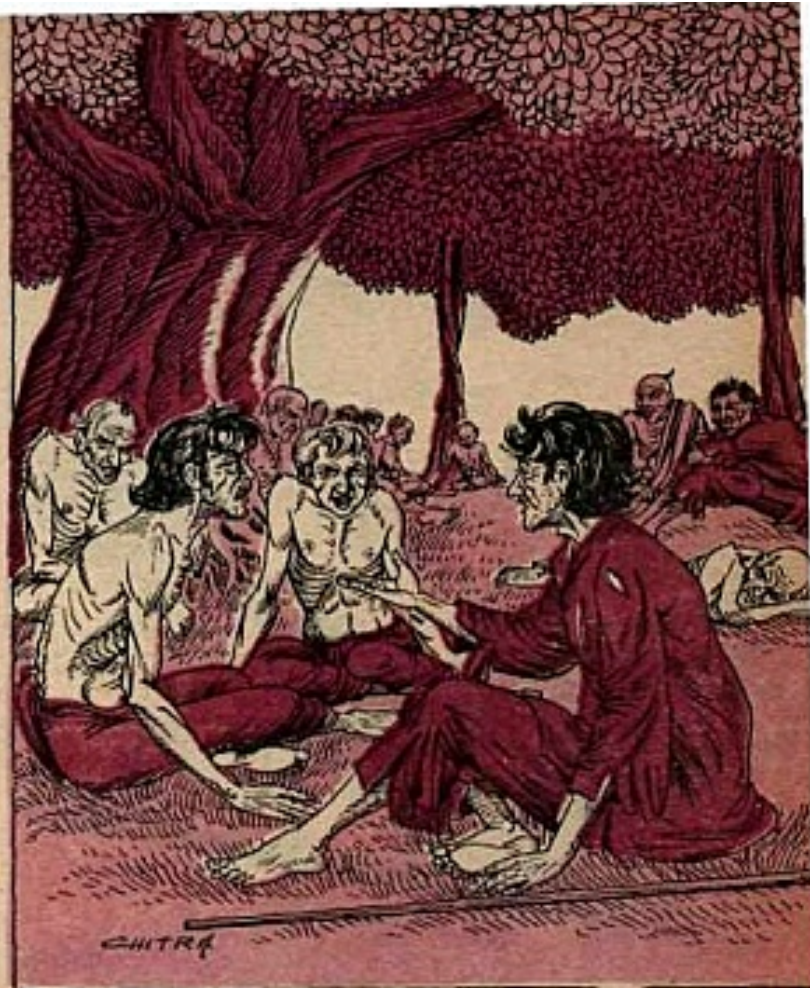
"शंकावर्मा क्या, कोई भी क्या कर सकते हैं? वे तो व्यापार करते हैं? वे अनाज हो तभी तो उसे बेच सकते हैं। बस! जब हमारे राजा ही हमें नहीं बचा पाते, ऐसी हालत में एक व्यापारी हमारी रक्षा कैसे कर सकते हैं? भगवान की कृपा हम पर से उठ गयी है। हमारे भाग्य में मरने को लिखा गया है; ऐसी हालत में कोई क्या कर सकते हैं?"

सत्यकाम ने सोचा कि शंकावर्मा के प्रति सब का दृढ़ विश्वास है। उसे बदलने के लिए सत्यकाम ने कोई अद्भुत प्रयोग करना चाहा। उसने बाक़ी लोगों से यों कहा:

"दोस्तो! मैं नहीं जानता कि सत्य क्या है? मगर आज एक विचित्र घटना हो गयी है। मैं निद्रा में ऊँघ रहा था, तब किसी ने गुप्त रूप से मेरे कान में कह दिया—"बेटा, इस अकाल को एक आदमी ने पैदा किया है। एक दुष्ट ने अनाज को गुप्त रूप से जमा किया और राज्य में अकाल पैदा किया है। उस दुष्ट को पकड़ने की शक्ति मैं तुम्हें देता हूँ। मैं तुम्हें एक सीटी देता हूँ। इसकी मदद से तुम दुष्टों को पकड़ सकते हो। यों बताया है। इसके बाद मेरे पैरों के पास सीटी पड़ी हुई थी।" सत्यकाम ने समझाया।

"सीटी कहाँ?" सब ने एक साथ पूछा।

सत्यकाम ने अपनी जेब में से एक सीटी निकाली और उसे सब को दिखाया। सब ने बड़ी उत्सुकता के साथ उसकी जाँच की।

"यह सीटी अनाज छिपाने वाले को कैसे पकड़ा देगी?" एक ने संदेह प्रकट किया।

"कल सुबह तुम्हीं लोग देखोगे न? लेकिन पहले तुम लोग उस खेत के पास ज्यादा से ज्यादा लोगों को इकट्ठा करो, तब देखो।" सत्यकाम ने समझाया।

सत्यकाम का पेशा गुड़िया बनाने का था। वह पुरुष और नारी; देवी–देवताओं की बहुत सुंदर गुड़िया बनाया करता था। जादू उसका प्रमुख शौक था। छे साल की उम्र में मरी उसकी इकलौती पुत्री जो अकाल का शिकार हो गयी थी, अपने पिता के जादू पर जान देती थी। सत्यकाम के पास एक सीटी थी जो बिना फूंके बज उठती थी। अपने परिवार के सभी लोगों के मरने के बाद सत्यकाम उसका उपयोग नहीं करता था। अपनी बेटी के लिए प्यारी सीटी को वह छोड़ नहीं पाया और उसे उसने अपनी थैली में सुरक्षित छिपा रखा था।

उस सीटी की विशेषता यह थी कि एक रबर की नली के छोर पर एक रबर की थैली सी होती है, उसका दूसरा छोर सीटी से जुड़ा होता है। इसलिए जब रबर की थैली को दबाते हैं, तब थैली के भीतर की हवा सीटी से जाकर बज उठती है।

सत्यकाम ने रबर की थैली को अपनी बगल में छिपाया और सीटी को अपने बायें हाथ के कुर्ते के नीचे खोंसकर रख दिया। उसने उसी प्रकार की एक दूसरी सीटी अपने पास रख ली। दूसरी सीटी को एक लाठी के छोर पर धागे से लटका कर बायें हाथ से पकड़ लेता और बगल में स्थित थैली को दबाने पर लाठी पर बंधी सीटी बिना फूंके बजने का भ्रम पैदा करती। थैली को जितनी बार दबाना हो, उतनी बार दबाना वह जानता है। उस रात को ही सत्यकाम ने सारा प्रबंध किया।

दूसरे दिन सवेरे तक बरगद के सामने वाले खेत में कंकाल जैसे अनेक लोग जमा हुए। सत्यकाम ने अपनी दूसरी सीटी को सब के हाथ दिया कि उसकी जांच करे। इसके बाद उसे धागे से लाठी के छोर पर लटका दिया, उस लाठी को बायें हाथ से पकड़कर यों बोला :
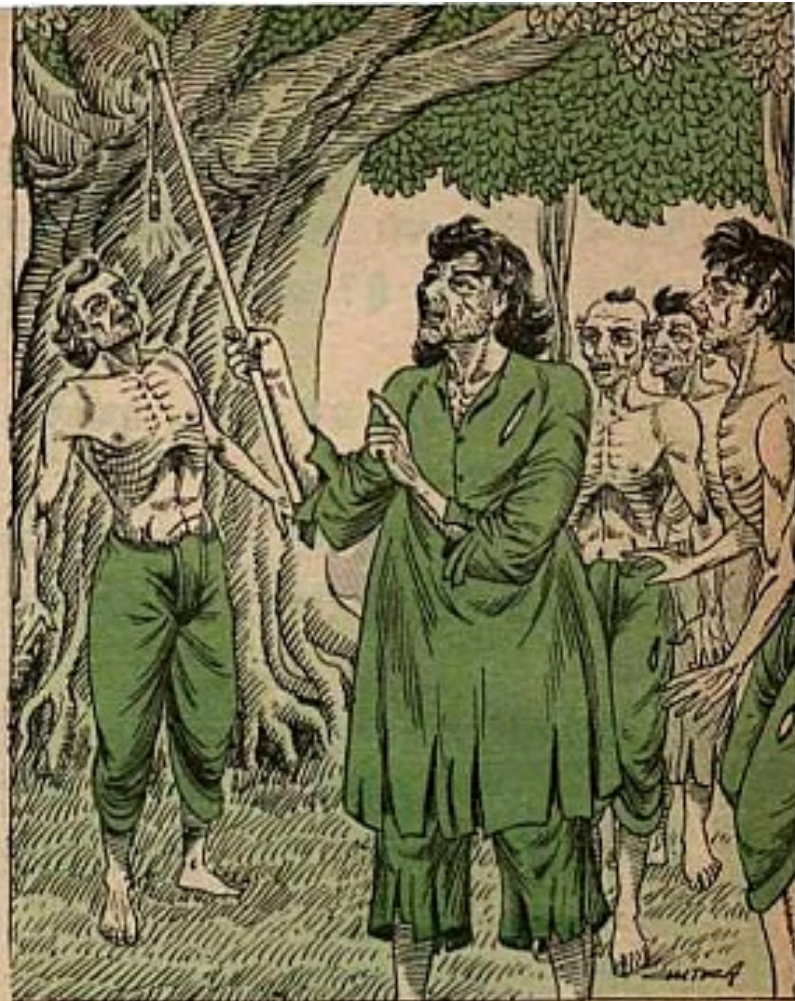
"दोस्तो, तुम लोगों ने कल मेरे सपने के बारे में सुना है। खाद्यपदार्थों का संग्रह जहाँ भी हो, उसका पता यह सीटी बता देगी। सीटी अगर एक बार बजती है, तो बात सत्य है। दो बार बजती है कि वह बात झूठ है। अब हम इसकी परीक्षा लेंगे; क्यों, तैयार हो न तुम सब?"

"हाँ, हाँ!" सब लोग चिल्ला उठे।

"पहले हम इस राज्य के प्रमुख व्यापारी के नाम से शुरू करेंगे। उनका नाम क्या बताया तुम लोगों ने?" सत्यकाम ने उच्च स्वर में पूछा।

"शंका वर्मा।" सब ने एक स्वर में कहा।

सत्यकाम ने सीटी को संबोधित करते कहा–"सीटी, क्या अनाज छिपानेवाला व्यक्ति शंकावर्मा है? कृपया जल्दी-जल्दी बता दो?"

सीटी एक बार बज उठी। सब लोग आश्चर्य में आ गये।

"क्या तुम शंकावर्मा को अनाज का चोर बताती हो? फिर कहो?" सत्यकाम ने पूछा।

फिर सीटी एक बार बज उठी।

"क्या उसने अनाज को गोदामों और कोठियों में छिपा रखा है?" सत्यकाम ने सीटी से पुनः पूछा।

सीटी दो बार बज उठी।

"सीटी कहती है, नहीं है।" सत्यकाम ने बताया।

"तो फिर कहाँ छिपाया है?" किसी ने पूछा।

"मंदिर के नीचे के तहखाने में होगा, है न?" सत्यकाम ने सीटी से पूछा।

सीटी एक बार बज उठी।

"चलो, मंदिर में।" सब लोग चिल्ला उठे।

मंदिर के पिछले हिस्से में सब को एक गुप्त द्वार दिखाई दिया। सत्यकाम अपने अनुचरों के साथ नीचे उतर कर गया। तहखाने में हजारों बोरे चावल भरा था।

जल्द ही यह खबर राजा के कानों में पड़ी। राजा ने अपने दल-बल के साथ आकर देखा। शंकावर्मा को बंदी बनाया। फ़ैसले में यह मालूम हुआ कि शंकावर्मा ने अपने मामा की मदद से फ़सल के समय सारा धान खरीदकर कृत्रिम अकाल की सृष्टि की है। उसी धान को चार गुने अधिक दाम पर बेचकर उसने खूब धन जोड़ना चाहा। राजा ने शंकावर्मा को देशद्रोही ठहरा कर उसे मौत की सजा सुनायी।

सत्यकाम की चतुरता पर मुग्ध हो राजा ने उसे अपना सलाहकार नियुक्त किया। सत्काम की बुद्धिमत्ता के कारण सारा देश अकाल और अकाल की मौतों से बच गया।

गधे की छाँह

अरब में इब्राहीम नामक एक गरीब आदमी अपने गधे को किराया पर देकर उस आमदनी से अपना परिवार चलाता था।

एक दिन किसी दूर देश की यात्री ने उस गधे को अपनी यात्रा के लिए किराये पर लिया।

दुपहर के समय जब कड़ी धूप पड़ने लगी, तब उन दोनों ने अपनी यात्रा स्थागित की और एक जगह आराम किया।

गधे की छाँह में यात्री लेट गया, मगर इब्राहीम धूप में ही रह गया। क्योंकि गधे की छाँह दोनों के लिए पर्याप्त न थी।

गधे को जिस यात्री ने किराये पर लिया था, वह उसकी छाँह में लेट कर जल्द ही सो गया। तब इब्राहीम अपने गधे को थोड़ी दूर ले गया, उसकी छाँह में लेटकर सो गया।

चिलचिलाती धूप के लगते ही यात्री जाग पड़ा। उसने देखा, गधा थोड़ी दूर पर है और उसकी छाँह में उसका मालिक सो रहा है। यात्री ने इब्राहीम को जगाया और उससे झगड़ने लगा।

"मैंने गधे को किराये पर दिया है, मगर उसकी छाँह को नहीं।" इब्राहीम ने कहा।

दोनों झगड़ते हाथ-पाई करने को तैयार हो गये। लेकिन उनके झगड़े का फ़ैसला होने के पहले गधा अपने बोझ को नीचे गिराकर कहीं भाग गया।
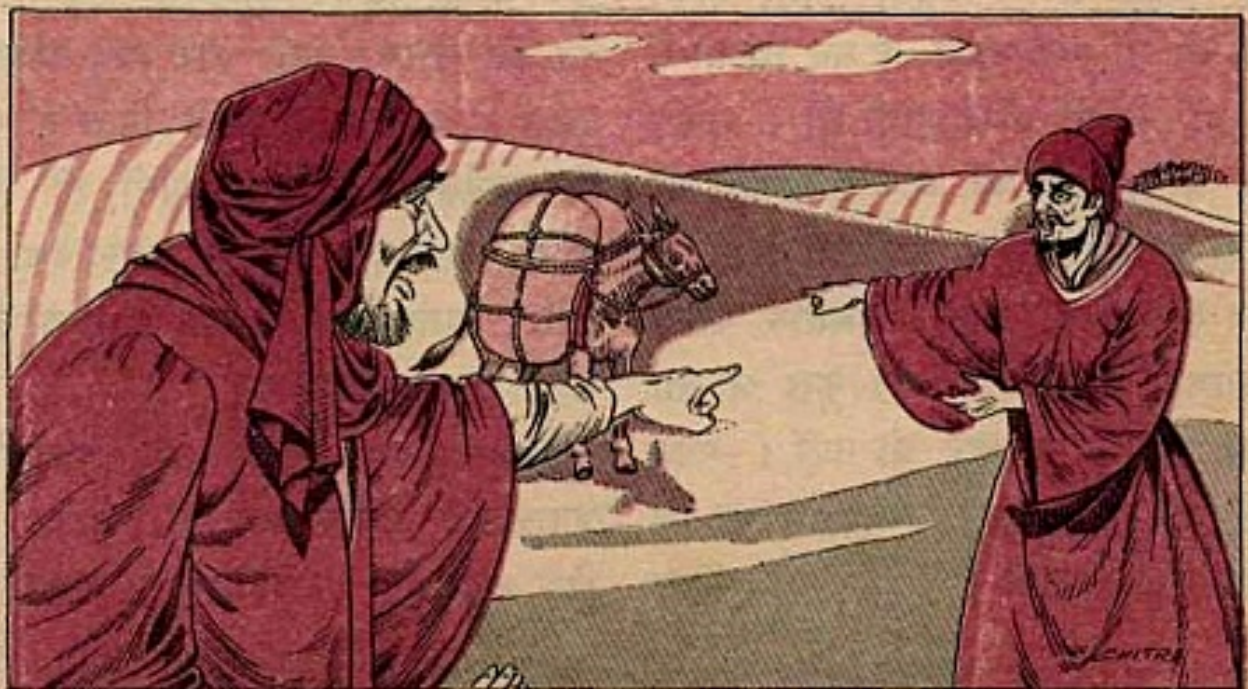
अहंकार

रामगिरि नामक गाँव में एक पंडित था। उसका नाम शिवज्ञान था। वह महापंडित और ज्ञानी भी था। सब लोग उसका आदर करते थे। उसके घर पर अकसर शास्त्र-संबंधी चर्चाएँ होती थीं।

शिवज्ञान पंडित के पार्वती नामक एक पुत्री थी। वह भी अच्छी विदुषी थी। वह जो भी बात सुनती, उसका अर्थ चट समझ जाती थी। उसका पिता अपने शिष्यों को जो पाठ पढ़ाते, वे सब शिष्यों से पहले ही पार्वती सीख जाती थी। उनके घर में पंडितों की जो चार्चाएँ चलती थीं वे सारी बातें वह समझ जाती थी।

सब विषयों का ज्ञाता शिवज्ञान पंडित यह मानता था कि वह जो कुछ जानता है, वह राई के बराबर भी नहीं। मगर पार्वती को इस बात का अहंकार था कि वह सब कुछ जानती है। बड़े-बड़े पंडित और बृद्ध भी किसी समस्या को लेकर चर्चा करते तो पार्वती उसमें दखल देती और उनकी शंकाओं का समाधान देती।

वह पंडित-गोष्ठियों में भी अनावश्यक दख़ल देती और कोई भूल करता तो उसे सुधार कर उनका अपमान तक कर बैठती।

पार्वती में यह अहंकार बचपन से ही था। फिर भी छोटी लड़की का अपनी अवस्था से बढ़कर बुद्धिमत्ता का परिचय देते देख उसका पिता और अन्य पंडित भी प्रसन्न हो जाते थे। उसके पिता ने सोचा कि पार्वती बड़ी हो जायगी तो विवेक प्राप्त करके हर बात में दखल देना छोड़ देगी। मगर उम्र के बढ़ने के साथ उसका अहंकार भी बढ़ता गया।

"तुम बड़े लोगों की चर्चाओं में अनावश्यक दख़ल मत दो, बेटी; यह ठीक नहीं है।" शिवज्ञान ने समझाया।

कुमारी दीपा

"पिताजी, पांडित्य और ज्ञान का उम्र के साथ संबंध ही क्या है? चाहे जितनी भी उम्र बढ़े, मूर्ख मूर्ख ही तो होता है।" पार्वती उत्तर देती। वह इस बात का संदेह भी करती कि उसकी बुद्धिमत्ता एवं अक़्लमंदी का सबके सामने प्रकट होना शायद पिताजी को पसंद नहीं है।

पार्वती पंद्रह साल की हो गयी, फिर भी उसका अहंकार नहीं घटा। शिवज्ञान पंडित समस्त विषयों का ज्ञाता होकर भी अपनी पुत्री को बदलने का मार्ग जान नहीं पाया। उसने अपनी यह व्यथा अपने कुछ मित्रों को सुनाया।

इतने में नवरात्रि के उत्सव आये। राजमहल में एक पंडित गोष्टी हुई जिसमें शिवज्ञान पंडित निमंत्रण पाकर भाग लेने चला गया। उसकी अनुपस्थिति में भी पंडित उसके घर गोष्ठियाँ चलाया करते थे। पार्वती गोष्ठियों में दखल देती थी।

एक दिन पंडितों ने पार्वती के सामने ही उच्च स्वर में एक विचित्र बात की चर्चा की। वह यह थी कि पुराने तालाब की मेंड पर जो मण्डप है, उसमें किसीने कुछ लिख दिया है। उसे न पढ़ पाने के कारण सभी पंडित लज्जित हो वापस लौट रहे हैं।

यह बात सुनते ही पार्वती दर्प से बोली–"मै उसे पढूंगी। एक की लिखी हुई चीज़ अगर में पढ़ न पायी तो मैं शिवज्ञान पंडित की पुत्री नहीं हुई।"
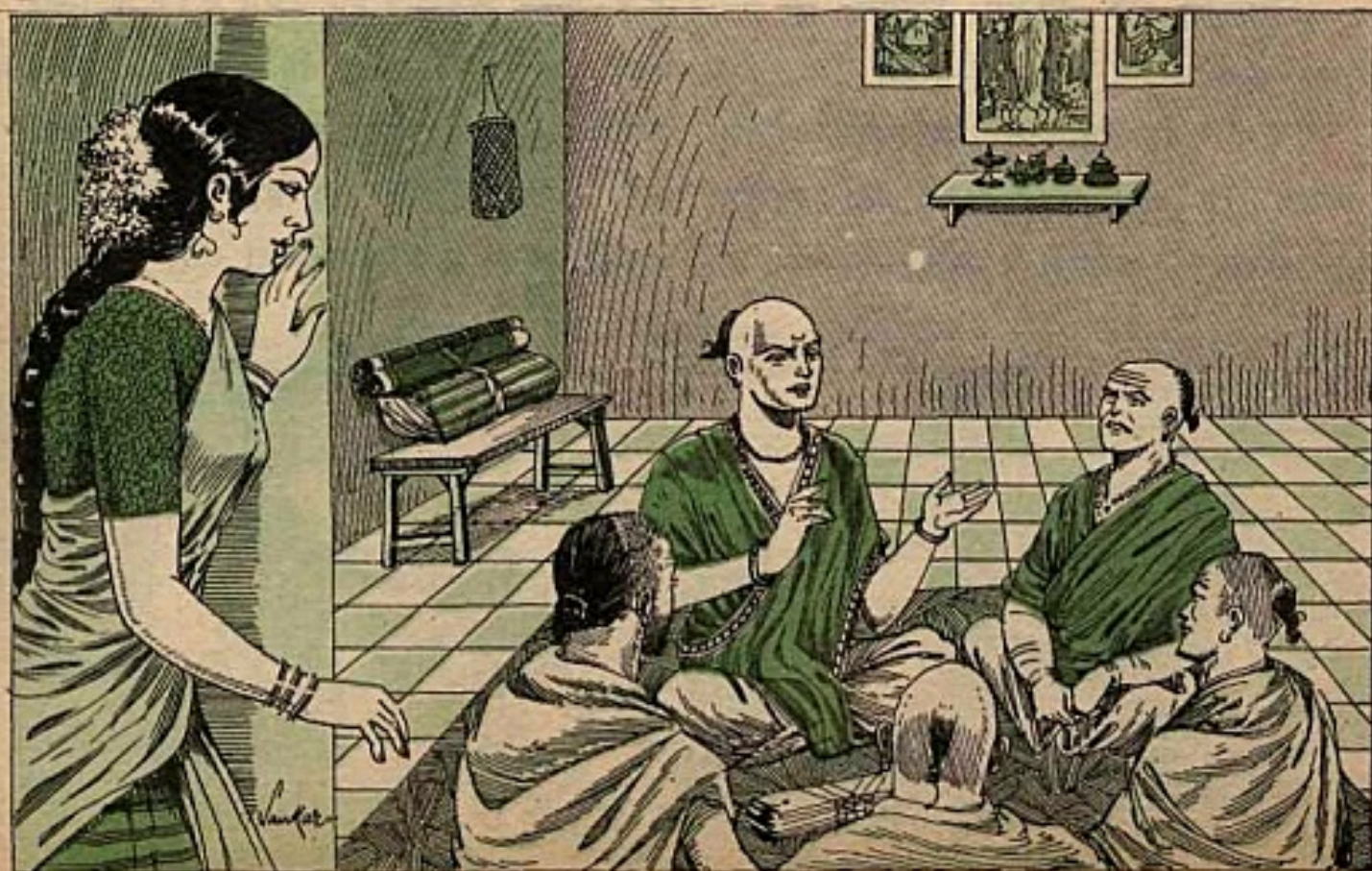
यह खबर सारे गाँव में फैल गयी कि मण्डप में लिखी गयी लिखावट को पार्वती पढ़ने जा रही है। गाँव के सभी लोग तालाब के किनारे मण्डप में आ पहुँचे। पार्वती ने आते ही दीवार पर बँधे पर्दे को हटा कर यों पढ़ा:

"इस काम को जो लोग कर सकते हैं, उन्हीं को इसे प्रकट रूप में पढ़ना है। इस तालाब में दस फुट तक कीचड़ भरी हुई है। मैं फावड़ा और टोकरी लेकर सारी कीचड़ निकाल दूंगा। इसके गवाह आप सब लोग हैं।"

पार्वती के पढ़ना समाप्त होते ही किसीने फावड़ा और टोकरी उसके सामने लाकर रख दिया। "यह क्या है?" पार्वती ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"तालाब की कीचड़ निकल दो।" सबने कहा।

"मैंने यही कहा था कि पढ़ सकूंगी, लेकिन यह नहीं बताया कि यह कीचड़ निकालूंगी।" पार्वती ने उत्तर दिया।

"क्या तुम हम सबको इसे न पढ़ सकनेवाले मूर्ख समझती हो? उसमें साफ़ लिखा हुआ है कि जो उसे पढ़ कर सुनाते हैं, उनको उसमें लिखे अनुसार करना होगा। इसीलिए हम में से किसीने प्रकट रूप में जोर से नहीं पढ़ा, तुमने बिना आगे-पीछे सोचे इसे पढ़ लिया; अब फावड़ा और टोकरी लेकर कीचड़ निकालना होगा।" बुजुर्गों ने निर्णय सुनाया।

पार्वती लाचार हो जोर से रो पड़ी।

बुजुर्गों ने उसे सांत्वना देकर समझाया— "सबमें थोड़ी-बहुत अक़्ल होती है। मगर किसी को भी अपनी अक़्लमंदी को वक़्त-बेवक़्त प्रकट करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए।" शिवज्ञान पंडित ने लौटकर देखा कि पार्वती में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। उसके अहंकार का दमन करने के लिए मित्रों ने जो उपाय किया था, उसका परिचय पाकर वह खुश हुआ। सबसे बड़ी प्रसन्नता उसे इस बात की हुई कि उसकी कन्या में परिवर्तन हो गया है।

रिश्वतखोर

एक देश में कपास खूब पैदा होता था। लेकिन पड़ोसी देश के लोग उसका अधिक मूल्य देकर ख़रीद ले जाते थे। इस कारण देश में कपास का ही भाव न बढ़ा, बल्कि देश की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त मात्रा में कपास बचता न था।

इसलिए राजा ने देश के कपास के संग्रह की जांच करने तथा विदेशों में जानेवाले कपास पर शुल्क लगाने के लिए एक अधिकारी को नियुक्त किया। वह अधिकारी कपास पैदा करनेवाले किसानों से रिश्वत लेकर उनकी इच्छा के अनुसार कपास को निर्यात करने देता और देश में कपास के संग्रह का गलत हिसाब रखता था। धीरे-धीरे वह अधिकारी रिश्वत की मात्रा बढ़ाने लगा। इससे किसानों को घाटा होने लगा। तब सब ने जाकर पैदावर विभाग के मंत्री के पास जाकर निवेदन किया कि कपास का अधिकारी बड़ा ही रिश्वतख़ोर है, इसलिए उसे हटाकर उसकी जगह किसी अच्छे अधिकारी को नियुक्त किया जाय। पैदावार विभाग के मंत्री ने किसानों के प्रति सहानुभूति दिखाई और कहा— "अच्छी बात है, तुम सब प्रत्येक व्यक्ति मुझे एक-एक हज़ार रुपये चुका दो। मैं उस अधिकारी को हटा कर दूसरे की नियुक्ति करूँगा।"

एक जमाने में कोसल देश में सिद्धिस्वामी नामक एक दानी था। वह रोज़ गरीबों में अन्न बाँटा करता था। उसकी दानशीलता की बात सारे देश में फैल गयी। राजा के कानों में जब यह बात पड़ी तब उसने सोचा—"ऐसे व्यक्ति की सहायता करना भी पुण्य कार्य है।" यह सोचकर राजा रोज़ सिद्धिस्वामी के यहाँ खाने के पदार्थ भेजा करता था।

सिद्धिस्वामी की पत्नी हंसमती सब प्रकार से अपने पति के योग्य पत्नी थी। उन्हें खाने को भले ही न बचता, फिर भी वह दूसरों को खिला देती। निरंतर अन्न का दान करनेवालों के रूप में उन पति-पत्नी का यश सारे कोशल देश में फैल गया। राजा के द्वारा प्रति नित्य भेजे जानेवाले खाने के पदार्थों के द्वारा वे बेरोकटोक अन्न का दान करते रहें।

एक बार कोसल देश का राजा तीर्थ-यात्राएँ करते काशी पहुँचा। सब लोग गंगाजी में स्नान करके वापस लौट रहे थे, तब कुछ सिपाहियों ने कहा—"काशी के नरेश आ रहे हैं, हट जाओ।" उन्होंने कोसल राजा को भी ढकेल दिया।

इसे देख कोसल राजा के सिपाहियों को क्रोध आया। वे चिल्ला उठे—"कोसल राजा को तुम लोग क्या समझते हो? काशी राजा को इतना घमण्ड?"

ये बातें काशी राजा ने सुन लीं। उसने अपने घोड़े को रोक कर कोसल राजा को नमस्कार किया और निवेदन किया—"ओह, आप सिद्धिस्वामी देश के राजा हैं। यह बात न जानने के कारण मेरे सिपाहियों ने अपचार किया है, क्षमा कीजिए।"

ये बातें सुनते ही कोसल राजा का मन कचोट उठा—"मेरे दिये जानेवाले भोजन

जयदेव अवस्थी

पदार्थों का अन्नदान करनेवाले सिद्धिस्वामी को ऐसा यश प्राप्त है!" यह सोचकर राजा ने शीघ्र काशी की यात्रा समाप्त की और कोसल को लौट आया। लौटते ही उसने प्रति दिन सिद्धिस्वामी के यहाँ भेजे जानेवाले भोजन पदार्थों को रोक दिया।

फिर भी सिद्धिस्वामी तथा उसकी पत्नी ने चिंता नहीं की और पहले की तरह वे निरंतर अन्न का दान करने लगे। सिद्धिस्वामी का अपयश करने के ख्याल से कोसल राजा उसके घर रोज़ अधिक संख्या में अतिथियों को भेजने लगा।

सिद्धिस्वामी को अतिथियों का सत्कार करने के लिए धीरे धीरे अपनी जमीन-जायदाद बेचना पड़ा। सारी जायदाद के समाप्त हो जाने पर सिद्धिस्वामी चन्दा वसूल करने निकल पड़ा। उनके दान के प्रति आदर भाव रखनेवालों ने दिल खोलकर धन की सहायता दी।

मगर वह भी धीरे धीरे समाप्त हो गया। एक दिन सिद्धिस्वामी को बड़ी मुश्किल से एक पंसेरी चावल मात्र मिले। तब तक बीस मेहमान खाने के इंतज़ार में बैठे थे। सिद्धिस्वामी को इसे देख बड़ी चिंता हुई।

उस समय हंसमती ने अपना मंगलसूत्र पति के हाथ में देकर उसने अपने कंठ में हल्दी में भिगोया धागा पहन लिया और कहा—"आप चिंता न कीजिए, अपना कार्य पूरा कीजिए।" फिर क्या था, अतिथियों का सत्कार संपन्न हुआ।
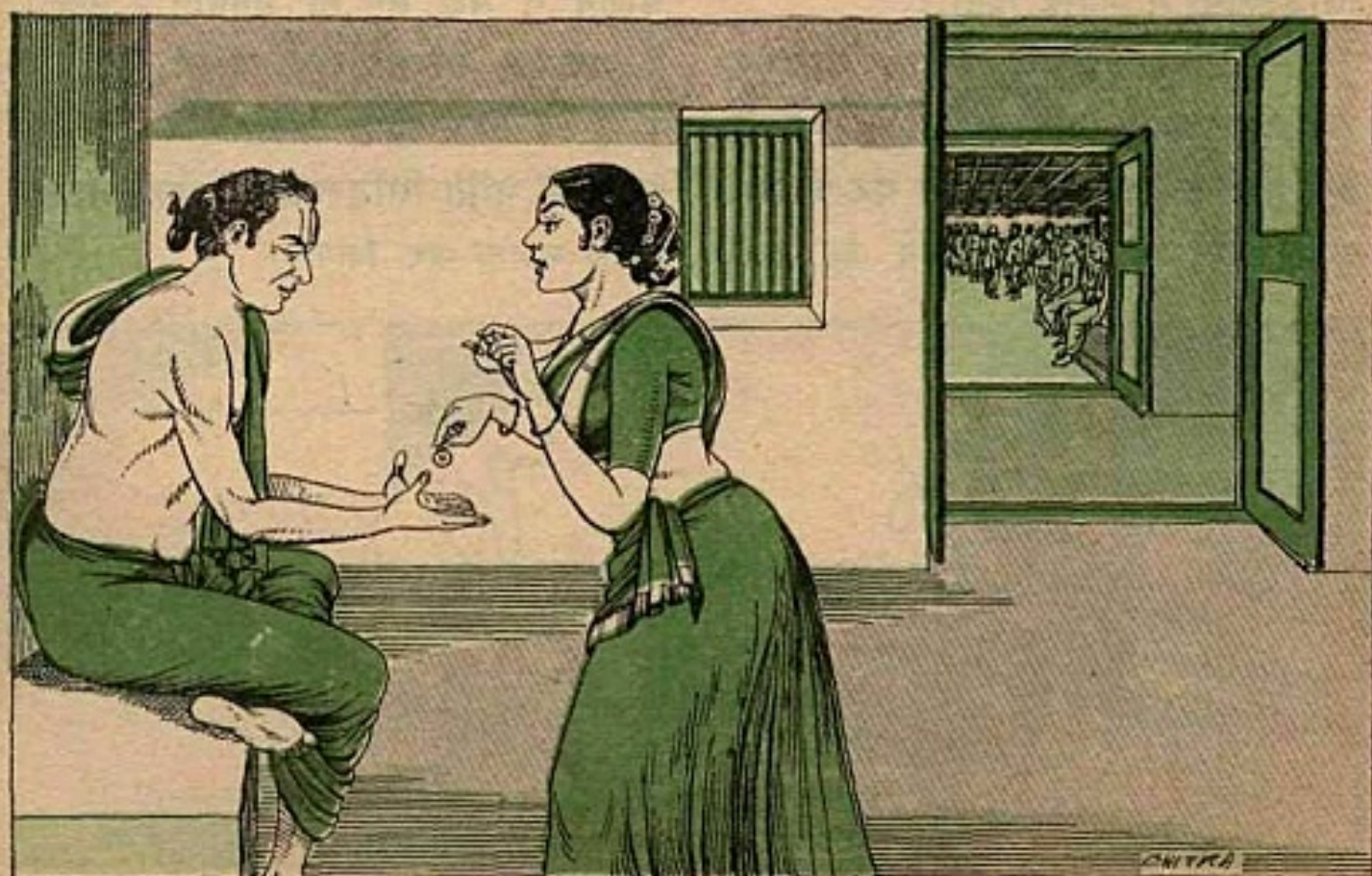
उस दिन शाम तक सिद्धिस्वामी के यहाँ एक कौड़ी भी न बची थी। वह अपनी पत्नी को साथ ले काशी की यात्रा पर चल पड़ा।

उस दिन रात को वे लोग एक सराय में ठहर गये।

उसी सराय में कोई तीन यात्री आये। वार्तालाप के संदर्भ में उनमें से एक ने पूछा–"आज के जमाने में यात्रियों को भोजन नहीं मिलता। हम कोसल देश जाकर सिद्धिस्वामी के आतिथ्य पाने को ललचा रहे हैं। महाशय, क्या आप सिद्धिस्वामी को जानते हैं?"

ये बातें सुन सिद्धिस्वामी और उनकी पत्नी आश्चर्य में आ गये।

"वे वहीं पर हैं, आप लोग जाइये।" सिद्धिस्वामी ने जवाब दिया।

उन तीनों यात्रियों के सो जाने पर हंसमती ने अपने पति से कहा–"पतिदेव, हम अभी रवाना होकर अपने घर जायेंगे। इनके आने के पहले भोजन का प्रबंध करना है। वरना हम असत्य दोष के अपराधी होंगे।"

"हाथ में एक कौडी नहीं है। इन्हें भोजन कहाँ से खिलायेंगे?" सिद्धिस्वामी ने कहा।

"कोई बात नहीं, हमारे घर में एक कोल्हू और दो मूसल और बचे हैं। उन्हें बेच डालेंगे।" हंसमती ने समझाया।

दोनों तुरंत रवाना होकर सवेरा होने के पहले घर पहुँचे। बेचने के लिए कोल्हू को हिलाया तो उसके नीचे उनके पुरखों के द्वारा छिपाये गये धन की हंडियाँ निकल आयीं। उस दिन पति-पत्नी ने उन तीनों यात्रियों को ही नहीं, बल्कि सारे गाँव वालों को दावत दी।

यह बात कोसल राजा के कानों तक पहुँची। उन्हें यह न सूझा कि अगर वह भोजन न भेजें तो भी भगवान दे सकता है, अब इस आश्चर्य पूर्ण घटना को देख राजा ने पश्चात्ताप किया और फिर से पहले की भाँति सिद्धिस्वामी के यहाँ भोजन पदार्थ भेजना शुरू किया।

महाभारत
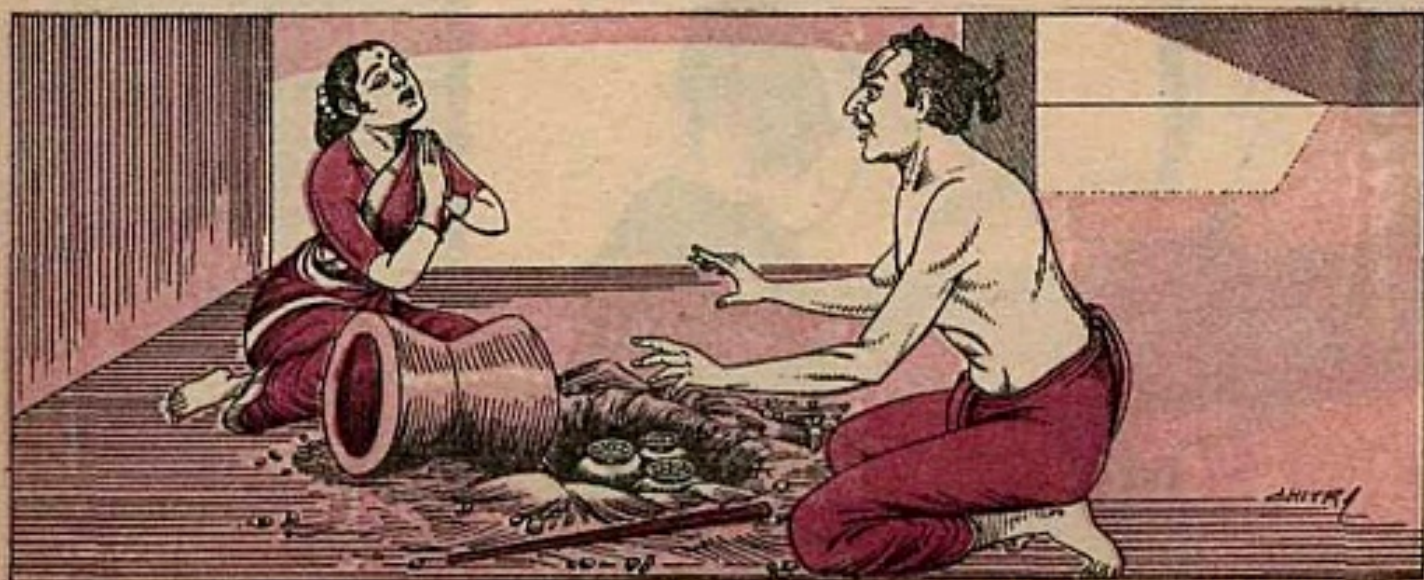
युद्ध का सातवाँ दिन था। भीष्म ने कौरव सेनाओं को मण्डल-व्यूह में खड़ा किया। धृतराष्ट्र के पुत्र कई हज़ार रथों और गजसेना के साथ भीष्म के रक्षक बनकर खड़े हो गये।

कौरवों की व्यूह रचना को देख युधिष्ठिर ने वज्र-व्यूह में अपनी सेनाओं को नियुक्त किया। युद्ध का प्रारंभ होते ही योद्धा एक के व्यूह को दूसरे भेदने लगे। द्रोण ने विराट के साथ, अश्वत्थामा ने शिखण्डी से, दुर्योधन ने धृष्टद्युम्न के साथ, नकुल और सहदेव ने अपने मामा शल्य से, विंदानुविंद ने ऐरावंत से, अनेक कौरव वीरों ने अर्जुन, भीम, कृतवर्मा के साथ, अभिमन्यु ने धृतराष्ट्र के पुत्र चित्रसेन, विकर्ण, दुर्मर्षणों के साथ, घटोत्कच ने भगदत्त से, अलंबुस ने सात्यकी के साथ, भूरिश्रव ने धृष्टकेतु से तथा युधिष्ठिर ने श्रुतायु के साथ युद्ध किये।

अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले वीरों ने उस पर बाणों की वर्षा की। अर्जुन ने क्रुद्ध होकर उन पर ऐंद्रास्त्र का प्रयोग किया जिस से उसके साथ युद्ध करनेवाले सभी वीर घायल हो गये। उसके बाण शत्रुसेना में सर्वत्र गिरते जा रहे थे, इससे परेशान हो सभी कौरव वीर भीष्म की शरण में गये।

इस प्रकार भागकर आनेवालों में सुशर्मा मुख्य था। दुर्योधन ने सुशर्मा को प्रेरित करते कहा—"भीष्म पितामह अर्जुन के

५७. ऐरावंत की मृत्यु

साथ जान लड़ाकर युद्ध कर रहे हैं, तुम सब लोग उनकी सहायता के लिए जाओ।"

शीघ्र ही कौरव वीरों को साथ ले भीष्म अर्जुन के साथ युद्ध करने आये।

इस बीच में विराट के साथ युद्ध करने वाले द्रोण ने पहले विराट के सारथी तथा घोड़ों को मार डाला, इसके बाद विराट अपने पुत्र शंख के रथ पर सवार हो युद्ध करने लगा। तब द्रोण ने एक ही बाण से शंख को मार डाला, इसे देख विराट युद्ध-क्षेत्र से भाग गया।

इसी प्रकार शिखण्डी के साथ युद्ध करते अश्वत्थामा ने शिखण्डी के सारथी तथा उसके घोड़ों को मार डाला। तब शिखण्डी तलवार लेकर बड़ी कुशलता के साथ अपने ऊपर प्रयोग किये जानेवाले बाणों को ध्वस्त करने लगा। आख़िर शिखण्डी के हाथ की तलवार टूट गयी, तब उसने टूटी हुई तलवार को अश्वत्थामा पर फेंक दिया और बचकर भाग निकला।

उधर अलंबुस के साथ सात्यकी ने अद्‌भुत ढंग से युद्ध किया। राक्षस अलंबुस ने माया युद्ध शुरू किया, इस पर सात्यकी ने अर्जुन के द्वारा प्राप्त ऐंद्रास्त्र का प्रयोग किया। तब अलंबुस बुरी तरह से घायल हो भाग गया।

धृष्टद्युम्न ने दुर्योधन के साथ युद्ध करते उसे बाणों की वर्षा में डुबो दिया। इसके बाद दुर्योधन को घायल बनाकर उसके घोड़ों को मार डाला। दुर्योधन तलवार लेकर रथ से कूद पड़ा और धृष्टद्युम्न पर हमला कर बैठा। इतने में शकुनि आ पहुँचा और दुर्योधन को अपने रथ पर बिठाकर दूर ले गया।

कृतवर्मा ने भीम के साथ युद्ध किया। इस युद्ध में उसने भीम को घायल किया और वह भी घायल हुआ। आख़िर अपने घोड़ों को खोकर अपने साले कृषक के रथ पर जा चढ़ा। यह घटना दुर्योधन की आँखों के सामने ही घटी। तब भीम ने कौरव सेनाओं को भगाया।

उलूपी और अर्जुन के द्वारा उत्पन्न व्यक्ति ने विंदानुविंदों के साथ युद्ध करके उनको बाणों से सताया और उनकी सेना को भी भगा दिया।

घटोत्कच और भगदत्त के बीच विचित्र युद्ध हुआ। भगदत्त ने एक बड़े हाथी पर सवार हो पांडवों की सेना को तितर-बितर बनाया। अपनी रक्षा करनेवाले व्यक्ति को न पाकर पांडव-सेनाएँ भागने लगीं। घटोत्कच भी अचानक विचित्र ढंग से गायब हो गया। इतने में कौरव सेना के बीच हाहाकार मच गया। घटोत्कच पुनः दिखाई पड़ा और भगदत्त पर बाणों की वर्षा की। भगदत्त ने घटोत्कच को बाणों तथा तोमरों से सताया, आखिर घटोत्कच थककर युद्ध भूमि से भाग गया।

नकुल और सहदेव ने अपने मामा शल्य के साथ युद्ध करके उस महान वीर को बेहोश बनाया। शल्य का सारथी रथ को दूर ले गया। नकुल और सहदेव विजयी हो सिंहनाद कर उठे, इस पर कौरव बहुत ही निराश हुए। तब तक मध्याह्न हो चला था।

अभिमन्यु तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें अभिमन्यु ने चित्रसेन, विकर्ण तथा दुर्मर्षणों के रथों को तोड़ डाला। इसे देख कौरव योद्धा

अभिमन्यु पर टूट पड़े। तब बड़ी तेज़ी के साथ अर्जुन अभिमन्यु की सहायता के लिए आ पहुँचा। दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। अर्जुन के अस्त्रों ने सभी शत्रुओं को विकल बनाया, सुशर्मा के अनेक रिश्तेदार अर्जुन के हाथों में मारे गये। इस पर कुपित हो सुशर्मा कुछ योद्धाओं को साथ ले अर्जुन पर टूट पड़ा। अर्जुन ने उन सब को हरा दिया और भीष्म का सामना करने के लिए आगे बढ़ा। इस बीच उसे दो घड़ियों तक दुर्योधन, सैंधव वगैरह के साथ युद्ध करना पड़ा।

अर्जुन जब भीष्म के पास पहुँचा तब तक युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव

भी वहाँ आ पहुँचे। तब पाँचों पांडव एक साथ भीष्म के साथ युद्ध करने लगे।

पांडव सब मिलकर भी भीष्म को पीड़ित नहीं कर पाये। इतने में सैंधव ने आकर पांडवों के सभी धनुषों को बेकाम कर दिया। दुर्योधन ने युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव पर बाणों का प्रयोग करके उन्हें सताया। शल्य इत्यादि कौरव दल के योद्धाओं ने भी पांडवों को बुरी तरह से बाणों से मारा।

इस पर युधिष्ठिर ने शिखण्डी के पास जाकर कहा—"तुमने भीष्म का वध करने की प्रतिज्ञा की। देखते नहीं हो कि भीष्म कैसा दारुण युद्ध कर रहे हैं। मुझे लगता है कि तुम भीष्म को देख घबरा रहे हो, जल्दी जाकर उनका वध करो।"

ये बातें सुन शिखण्डी रोष में आया और भीष्म के साथ युद्ध करने को चल पड़ा। रास्ते में शल्य ने शिखण्डी पर अत्यंत भयंकर आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया। पर शिखण्ड़ी जरा भी विचलित नहीं हुआ, उसने इसके बदले में वारुणास्त्र का प्रयोग किया।

इस बीच भीष्म ने युधिष्ठिर के धनुष और उनकी ध्वजा को भी तोड़कर सिंहनाद किया। युधिष्ठिर एक दम घबरा गया।

भीम का पौरुष जाग उठा। वह गदा लेकर सैंधव पर टूट पड़ा। सैंधव भीम पर बाणों का प्रहार करने लगा, पर भीम ने इसकी परवाह किये बिना सैंधव के घोड़ों को गदा से प्रहार करके मार डाला। तब दुर्योधन भीम पर हमला कर बैठा। भीम गदा लेकर उस पर भी टूट पड़ा। उस गदा से बचने के लिए दुर्योधन के सैनिक उसे अकेले छोड़ डरकर भाग गये। इस प्रकार भीम के गदे के प्रहार से बचकर चित्रसेन अपने रथ से कूद पड़ा। उसका रथ ध्वस्त हुआ। वह प्राणों के साथ भाग खड़ा हुआ, तब सब ने चित्रसेन का अभिनंदन किया। मौक़ा पाकर धृतराष्ट्र

का पुत्र विकर्ण चित्रसेन को अपने रथ पर ले भाग गया।

थोड़ी देर बाद शिखण्डी भीष्म के सामने आया और चिल्ला उठा–"ठहर जाओ!" मगर भीष्म ने उसके साथ युद्ध नहीं किया। सूर्यास्त के समय तक धृष्टद्युम्न और सात्यकी ने कौरव सेना को ध्वस्त करना शुरू किया। तब विंदानुविंद ने धृष्टद्युम्न का सामना किया और उसके रथ को तोड़ डाला। वह सात्यकी के रथ पर सवार हो गया।

उस दिन युद्ध के समाप्त होने के पहले अर्जुन ने सुशर्मा इत्यादि को पराजित किया। भीम ने दुर्योधन वगैरह को हराया। तब जाकर दोनों दलों के योद्धा अपने अपने शिविरों में लौट गये। शिविरों में पहुँचते ही अपने अपने शरीरों में चुभे बाणों को निकलवा कर खूब स्नान किये, युद्ध की चर्चा करना छोड़ थोड़ी देर संगीत के वाद्यों का आनंद लूटने लगे।

दूसरे दिन फिर से दोनों दलों की सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार हो गयीं। व्यूह और प्रति व्यूह की रचना के उपरांत युद्ध के प्रारंभ में ही भीष्म आज रुद्र के समान भयंकर रूप धारण कर गया। इसे देख युधिष्ठिर ने प्रमुख योद्धाओं को भीष्म से लड़ने भेजा।

भीष्म सोमक, सृंजय तथा पांचालों का वध करने लगा। उसके समक्ष साहस के साथ ठहरकर अकेले भीम ने ही युद्ध किया। वह भी भीष्म के समान भयंकर प्रतीत हो रहा था। उग्र रूप धारण करके भीष्म के सारथी को मार डाला और उसके रथ को युद्ध भूमि से हट जाने के लिए बाध्य किया। आखिर भीष्म की सहायता करने वालों में से धृतराष्ट्र के पुत्र सुनाथ का वध कर डाला।

इस दारुण कृत्य को देख धृतराष्ट्र के सात और पुत्र–आदित्य केतु, बह्वाशी, कुंडधार, महोदर, पंडितक, अपराजित तथा विशालाक्ष-भीम के साथ युद्ध के लिए

सन्नद्ध हो गये। भीम ने उन सातों पर बाणों की वर्षा करके उनको मार डाला।

इस विभीषिका को देख दुर्योधन के शेष भाई घबरा गये। दुर्योधन दुखी हो भीष्म पितामह के पास जाकर बोला– "दादा जी, मेरे सभी भाइयों का भीम वध कर रहा है। जो साहस करके लड़ रहे हैं, उन सबको भीम मृत्यु के मुँह में भेज रहा है। आप हमारे प्रति विशेष ध्यान नहीं ले रहे हैं। मैं बड़ी उलझन में पड़ा हुआ हूँ।"

दुर्योधन की बातें सुन भीष्म को क्रोध आया। उसने रोनेवाले दुर्योधन से कहा– "क्या यह बात तुम पहले नहीं जानते थे? हम सबने पहले ही तुम्हें सारी बातें समझायीं। तुम्हारे भाइयों में से कोई भी भीम के सामने जाएगा, उनका वध किये बिना भीम नहीं छोड़ेगा! तुमको चाहिए था कि मुझे तथा द्रोण को इस युद्ध में न फँसाते। अब तुम्हीं अपने पराक्रम के बल पर पांडवों का वध करो।"

दुपहर तक युद्ध अति भयंकर दशा में पहुँचा। दारुण युद्ध करनेवाले भीष्म पर एक साथ धृष्टधुम्न, सात्यकी, और शिखण्डी अपनी अपनी सेनाओं के साथ आ पहुँचे। इसी प्रकार विराट, और द्रुपद सोमकों को साथ ले अपनी सेनाओं सहित घटना स्थल पर पहुँचे। साथ ही कैकेय, धृष्टकेतु और कुंतिभोज अपनी अपनी सेनाओं ससेत भीष्म पर टूट पड़े। अर्जुन, उप पांडव और चेकितान ने अन्य कौरव योद्धाओं के साथ युद्ध किया। अभिमन्यु, भीम और घटोत्कच दूसरी ओर से कौरव सेना पर हमला कर बैठे और उनका विनाश करने लगे।

उधर कौरव योद्धाओं ने इसी प्रकार पांडव सेना का संहार किया। द्रोण ने सोमक तथा सृंजयों का वध किया। भीम के हाथों में मरनेवाली कौरव सेनाएँ तथा द्रोण के हाथों में धराशायी होनेवाली पांडव सेनाएँ हाहाकार कर उठीं।

अति भयंकर रूप से होनेवाले उस संग्राम में अर्जुन का पुत्र ऐरावंत कौरव सेना से जा टकराया।

ऐरावंत की माता नागराज ऐरावत की पुत्री है। उसके पति को गरुड ने मार डाला, इस पर ऐरावत ने उसे अर्जुन के पास भेज दिया। वह अर्जुन पर मोहित हुई और उसके द्वारा ऐरावंत का जन्म दिया। ऐरावंत नागलोक में ही अपनी माता के पास बढ़ता रहा। मगर उसका चाचा अश्वसेन अर्जुन से द्वेष रखता था, इसलिए अश्वसेन ने ऐरावंत को घर से निकाल दिया।

उस समय अर्जुन इंद्रलोक में था। यह समाचार मिलते ही ऐरावंत इंद्रलोक में जाकर अर्जुन से मिला। अपना जन्म वृतांत सुनाया, सभी विद्याओं में अपने ही समान योग्य पुत्र ऐरावंत को देख अर्जुन अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला– "युद्ध के समय तुम्हें हमारी सहायता करनी होगी।" यह बात स्मरण रखकर ऐरावंत युद्ध में पांडवों की सहायता करने के लिए उत्तम जाति के यवन अश्वों को साथ ले आ पहुँचा।

ऐरावंत अपनी अश्वसेना के साथ कौरव सेना पर टूट पड़ा। इस पर शकुनि के छोटे भाई गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवंत, अर्जव और शुक नामक छे योद्धा शकुनि के मना करते रहने पर भी साहस करके ऐरावंत की अश्वसेना के साथ जूझने चल पड़े। वे सब अपने बाणों के द्वारा ऐरावंत को सताने लगे, तब ऐरावंत तलवार लेकर अपनी आत्मरक्षा करते हुए वृषभ को छोड़ शेष पांचों योद्धाओं को मार बैठा।

इसे देख दुर्योधन ने ऐरावंत से लड़ने के लिए अर्षश्रृंग नामक राक्षस को भेजा। दोनों ने अविराम भीषण युद्ध किया। आखिर ऐरावंत चोट खाकर बेहोश हो गया। तब उस राक्षस ने तलवार से उसका सिर काट डाला। इसे देख कौरव सेना ने हर्षनाद किया।

मित्र-भेद

[६]

करटक ने दमनक को आषाढ़भूति के भाग जाने का समाचार सुना कर आगे यों कहा : आषाढ़भूति के प्रति पूर्ण विश्वास होने के कारण देवशर्मा कालकृत्यों की पूर्ति के लिए थोड़ी दूर गया। भेड़ों की एक रेवड़ घास चर रही थी। उनमें दो भेड़ें लड़ने लगे। वे दोनों दौड़ते आकर अपने सर टकरा देते, फिर पीछे जाकर दौड़ते आते और ज़ोर से अपने सर टकरा देते। उनके सिर फूट कर ज़मीन पर ख़ून बह रहा था। ख़ून को चाटने के लिए एक सियार आ पहुँचा। उस वक़्त दोनों भेड़े पीछे हट गये थे।

देवशर्मा ने मन में सोचा–"यह सियार बेवकूफ़ है। इस बार जब दोनों भेड़ें अपने सिर लड़ा देंगे तब यह ज़रूर उनके सिरों के बीच दब कर मर जाएगा।"

देवशर्मा के सोचने के अनुसार दोनों भेड़ों ने दौड़ते आकर सिर टकरा दिये। ख़ून चाटनेवाला सियार उन भेड़ों के सिरों के बीच दब कर मर गया। मरे हुए सियार के बारे में चिंता करते देवशर्मा अपने शिष्य के पास पहुँचा। पर वहाँ उसका शिष्य आषाढ़भूति दिखाई न दिया। देवशर्मा ने जल्दी-जल्दी स्नान किया और लौट कर देखा तो उसके कपड़ों की गठरी थी, लेकिन सोने की गठरी न थी।

"उफ़! मेरा सोना चला गया।" यों कहते देवशर्मा बेहोश हो गया। थोड़ी देर में जब उसे होश आया, तब वह यह कहते रोने लगा–"अरे आषाढ़भूति! मुझे धोखा देकर कहाँ चले गये हो? जवाब तो दो!" फिर आषाढ़भूति के पैरों के

अंतिम पृष्ठ का चित्र

चिन्हों को देखते उस रास्ते चल पड़ा। शाम तक देवशर्मा एक गाँव में पहुँचा। ताड़ी की दूकान की ओर जानेवाले एक जुलाहा दंपति उसे दिखाई दिया। देवशर्मा ने उस जुलाहे से कहा–"बेटा, यहाँ पर मेरे जान-पहचान के कोई नहीं है। इसलिए तुम मुझे अपना अतिथि मान कर आज के लिए आतिथ्य दो।"

ये बातें सुन जुलाहे ने अपनी औरत से कहा–"अरी, इनको हमारे घर ले जाओ। इनके पैर धोकर खाना खिलाओ। इन्हें बिस्तर लगा कर इनकी परिचर्या करते घर पर ही रह जाओ। मैं तुम्हारे लिए थोड़ा मांस और ताड़ी लेते आऊँगा।"

जुलाहे की औरत कुलटा थी। वह यह सोचकर बड़ी खुश हुई कि उसे अपने प्रिय देवदत्त से मिलने के लिए एक अच्छा मौक़ा मिल गया है, तब देदशर्मा को साथ ले अपने घर पहुँची।

घर पहुँचते ही उस औरत ने देवशर्मा के लिए एक टूटी खाट डाल दी, बोली–"मेरी एक सखी आज ही अपने गाँव से आयी हुई है। उससे बात करके अभी आ जाती हूँ। मेरे लौटने तक आप घर की रखवाली कीजिये।" यों कहकर उसने अच्छे-अच्छे कपड़े व गहने पहन लिये और देवदत्त से मिलने के लिए चली गयी।

मगर रास्ते में उस औरत का पति खूब ताड़ी पीने के कारण लोटते, लड़खड़ाते, बाल बिखेरे, हाथ में ताड़ी का लोटा लिये लौटते दिखाई दिया। उसे देख वह बड़ी तेज़ी के साथ घर की ओर दौड़ आयी, अपने अच्छे कपड़े व गहने उतार कर पुराने कपड़े पहन लिये। लेकिन जुलाहे ने अपनी औरत को अच्छे कपड़े व गहने पहने देखकर भी ऐसा अभिनय किया, मानो उसने उसे देखा तक नहीं। उसने अपनी औरत की चाल-चलन के बारे में पहले ही सुन रखा था। घर लौटते ही जुलाहे ने अपनी औरत को देख क्रोध में आकर पूछा–"अरी कमीने कुलटे, तुम अभी-अभी कहाँ जा रही थीं?"

"मैं तुम्हें छोड़ जब घर लौटी, तब से कहीं नहीं गयी। तुम पियक्कड़ की ये बातें क्या करते हो? लोग कहते भी हैं कि जो पीता है, उसे अपनी जीभ पर क़ाबू नहीं होता और उसकी अक्ल भी काम नहीं करती। यह बात सच मालूम होती है।" जुलाहे की औरत ने कहा।

अपनी औरत के मुँह से झूठी बातें सुन जुलाहे का गुस्सा और बढ़ गया। उसने तब कहा—"मैंने तुम्हारी बदचलनी के बारे में पहले ही सुन रखा है। आज मैंने अपनी आँखों से देखा भी है।" यों कहते उसने लाठी लेकर अपनी औरत को खूब पीटा, तब उसे एक रस्से से खंभे से बाँध दिया और नशा चढ़ जाने के कारण सो गया।

जुलाहे की औरत की एक सखी नाइन थी, जो पहले से ही बदचलन थी। वह जुलाहे के घर आयी, उसने देखा कि जुलाहा सो रहा है, तब जुलाहे की औरत से बोली—"देवदत्त, तुम्हारे इंतज़ार में बैठा है, जल्दी जाओ।"

"मैं कैसे जाऊँ? देखो तो किस हालत में हूँ? मेरे मर्द तो घर में ही है।" जुलाहे की औरत ने जबाब दिया।

"मैं तुम्हारे बँधन खोल देती हूँ। तुम्हारा मर्द कल सुबह सूर्योदय तक जागेगा नहीं, चाहे तो मुझे तुम अपनी जगह बाँध दो। अगर रात के वक़्त तुम्हारा मर्द जाग पड़े तब भी नशे की हालत में मुझे देख समझेगा कि तुम्हीं हो। तुम देवदत्त के पास जाकर जल्दी लौट आओ।" नाइन ने समझाया। इस पर जुलाहे की औरत ने अपने बंधन खुलवा कर अपनी जगह अपनी सखी को खंभे से बाँध दिया और देवदत्त से मिलने चली गयी।

उसके चले जाने के थोड़ी देर बाद जुलाहा जाग उठा, बोला—"अरी, बदजात! मुझे वचन दो कि आइंदा तुम घर से न निकलोगी और मेरे साथ जीभ न लड़ाओगी, तभी मैं तुम्हारे बंधन खोल दूँगा।"

नाइन ने यह सोचकर जुलाहे को कोई जवाब न दिया कि वह उसके कंठ को पहचान लेगा। जुलाहे ने यही सवाल दो-तीन बार किया। लेकिन नाइन मौन रह गयी। इस पर नाराज़ हो जुलाहा एक तेज चाकू लाया, नाइन की नाक काटकर बोला—"तुम हमेशा के लिए नककटी रह जाओ।" इसके बाद जाकर वह सो गया। मगर सोना खो जाने की व्यथा के साथ भूख-प्यास से परेशान हो जागनेवाला देवशर्मा यह सारा नाटक अपनी आँखों से देखता रहा।

थोड़ी देर बाद जुलाहे की औरत लौट आयी। उसने नाइन से पूछा—"तुम कैसी हो? क्या वह दुष्ट जाग गया था?"

"मैं तो अच्छी हूँ, पर तुम्हारे कमबख्त मर्द ने बीच में उठकर मेरी नाक काट दी है। फिर उठकर मेरे कान भी काटने के पहले मेरे बंधन खोलकर मुझे अपने घर भेज दो।" नाइन ने कहा।

जुलाहे की औरत ने नाइन के बंधन खोलकर उसकी जगह अपने को बंधवा लिया, अपने मर्द को धिक्कारते चिल्ला उठी—"अरे मूर्ख, मुझ जैसी शीलवती को विकृत करना तुम से हो सकेगा? हे दिक्पाल! हे सूर्य-चन्द्र! हे वायुदेव? सुनिये! अगर मैं पतिव्रता हूँ तो मेरी नाक को ठीक कीजिए!...अरे दुष्ट! क्या तुमने देखा? मेरी शीलता के बल पर मेरी नाक कैसे पहले जैसी हो गयी है!"

जुलाहे ने सोचा कि अगर उसकी औरत झूठ बोलती हो तो उस पर आग लगाना है। अपने हाथ में जलनेवाली लकड़ी लेकर आ पहुँचा। अपनी औरत की नाक को पहले ही जैसे पाकर वह चकित रह गया। अगर वह यह माने कि उसने सचमुच नाक न काटी हो, तो ज़मीन पर खून गिरा हुआ है। उसने तुरंत अपनी औरत के बंधन खोल दिये, अत्यंत आनंद में आकर अपनी औरत का आलिंगन किया। उससे हज़ार बार माफ़ी माँगकर उसको खुश करने का हर तरह से प्रयत्न करने लगा।

१४४. ऊँचा धुआँकश

मोंटाना (अमेरिका) के अनकोंग में एक पहाड़ पर कच्चे तांबे को गलानेवाली भट्टियाँ हैं। उनके धुएँ को ऊपर ले जानेवाला यह धुआँकश संसार-भर में सबसे ऊँचा है। उसकी ऊँचाई ५८५ फुट है। जब तब इसके निरीक्षक इस्पात की बनी सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ते हैं। कहा जाता है कि ऊपर जाने पर हवा के बहते रहने से ऐसा लगता है कि उसका नाल हिल रहा है। यह नाल ईंटों से निर्मित है। इससे निकलनेवाला धुआँ जहरीला है।

Photo by Anant Desai
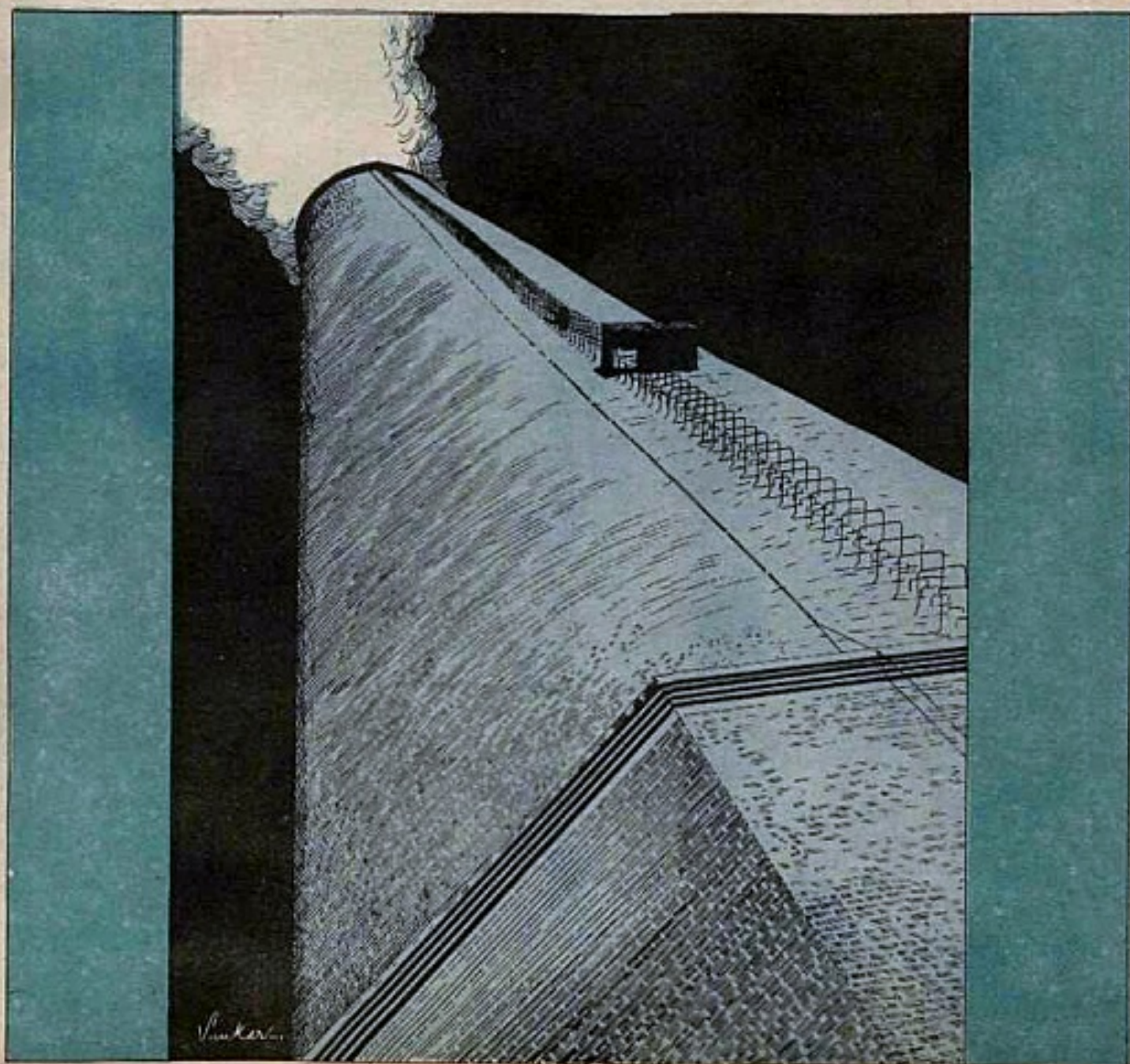
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

राजा नहीं, पर ताज सजाता

प्रेषक :
मंजुश्री कोछड़

Photo by Anant Desai

१८९२, सैक्टर-२२-बी,
चण्डीगढ़

योगी नहीं, पर ध्यान लगाता

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ जनवरी ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications,
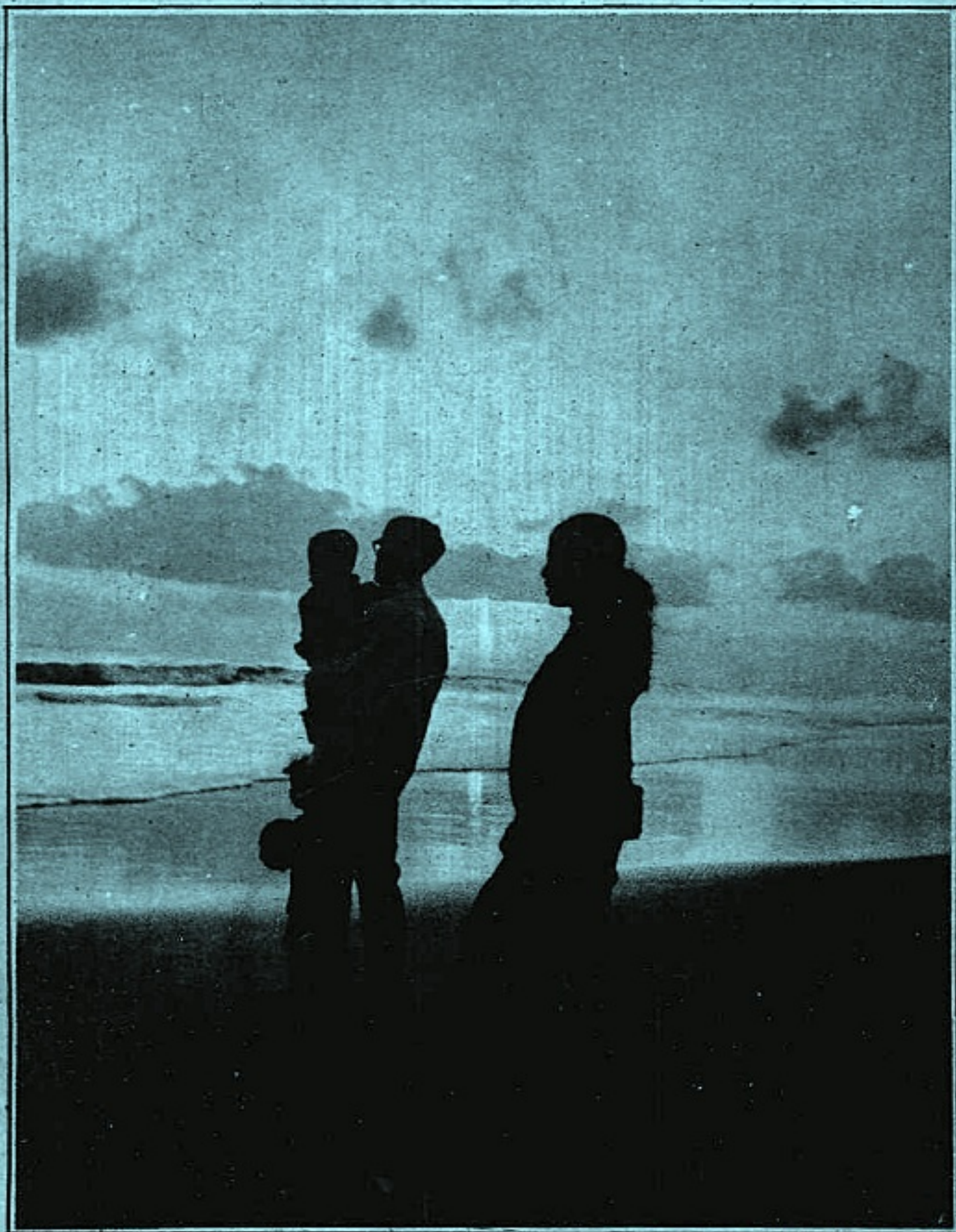
Photo by: **SAMBHU MUKHERJEE**

मित्र-भेद